50—76

पूज्य अम्बिका सोनी जी,

सादर प्रमाण

मैंने इस पत्र में आपको 'पूज्य' कहकर सम्बोधित किया है इसलिए आप यह न समझें कि आप मुझे प्रिय नहीं हैं क्योंकि आपने स्वयं ही यह नियम लागू किया है कि युवा कांग्रेस में कोई भी २५ साल की उम्र से ज्यादा न रह सकेगा इसलिए आपने युवा कांग्रेस की अध्यक्षता का पद छोड़ने का फैसला किया।

"आपकी गोहाटी कान्फ्रेंस में आपकी ललकार से बड़े-बड़े कांग्रेसी थर्रा गये। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। आप जानती हैं कि मैं खुद युवा हूं और सब दीवाने युवा-युवतियों से खास प्रेम करता हूं। यह ठीक है कि मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, [illegible]से कि आपकी बढ़ती जा रही है, लेकिन दीवानगी में उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ता। [illegible] हंसी-मज़ाक की हो, चाहे देश सेवा की हो, जीवन के लिए बहुत जरूरी [illegible]ले जमाने में देश की बाग-डोर आप जैसे ही सबल हाथों में जायेगी। [illegible]ड़े लोडर यह कहते नहीं थकते लेकिन यह भी मानने को तैयार नहीं कि [illegible] का जोश, बड़े लोगों के होश के बिना देश की ताकत बढ़ा सकता है। [illegible] भी नहीं भूलना चाहिए कि बड़े-बड़े लोग कभी स्वयं युवा थे और उस [illegible] उस समय के बड़े लोगों के साथ सहमत नहीं था लेकिन उनके बड़े लोग [illegible] लोगों को लीडर बनने से न रोक सके।

[illegible]पकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं कि आप युवा-कांग्रेस में उन [illegible]श के दीवानों को शामिल रहने दें जिनका दिल अभी जवान है और युवा [illegible] का सदस्य बनने की कम से कम उम्र भी घोषित कर दें वरना सब दीवाने पैदा होते ही आपकी पार्टी के सदस्य बनने आ जायेंगे।

आपका

चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

शीशे में मिस बिन्दू ने जब
चेहरा देखा अपना
शक्ल देख कर दंग रह गई
सच है या फिर सपना
चिल्लन की परछाई थी वह
जिसको समझी चेहरा अपना

दीवाना खेलकूद लाटरी का परिणाम अगले अंक मे देखिये

दीवाना

अंक 50 9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 1976 तक
वर्ष : 12

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
अ॰सम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चंदे की दरें—
छमाही : २५/- रु०
वार्षिक : ४८/- रु०
द्विवार्षिक : ९५/- रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

चाचा चौधरी

चाचा चौधरी और दीपू अपने गांव से दूर एक रिश्तेदार के घर कुछ दिन रहने के लिए रवाना हुए।
चल दीपू उस पेड़ के नीचे थोड़ा आराम कर लेते हैं।
चाचा जी मैं बहुत थक गया हूं।

घने जंगल में एक खूबसूरत नौजवान की नजर उन पर पड़ती है।

सुनिए ! आप बहुत थके हुए और प्यासे लगते हैं अगर
तो इधर से एक फर्लांग दूर मेरा एक बंगला है, आप वहां
सकते हैं और भूख-प्यास भी
लेकिन इस जंगल में आप क्यों रहते हो ?

बहुत लम्बी कहानी है, जब मैं छोटा ही था मेरे मां-बाप चल बसे। मेरी परवरिश मेरे एक करोड़पति चाचा ने की। उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी वो मुझे बेहद प्यार करते थे। एक दिन ऐसा आया कि वो भी मुझको अकेला छोड़ कर इस दुनिया से चल बसे। मैं बिल्कुल अकेला हो गया। मुझे प्रकृति से बहुत लगाव था। मैंने इसी जगल में एक सुन्दर बंगला बनवाया और अकेला रहना पसन्द किया और अब जब भी कोई राही इस तरफ से गुजरता है मैं उसकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ता।
बड़े दिलचस्प और बहादुर लगते हो जो इस घने जंगल में अकेले रहते हो।
लोहे का दरवाजा खुलते ही दो नौजवानों ने झुक कर उनको सलाम किया।
चाचा जी ये इतनी ऊंची-ऊंची दीवारें क्यों बनाई हैं इस बंगले के चारों ओर।
बेटा मैं बताता हूं, यह
रात को जंगली जानव
बचने के लिए।
खाने के लिए स्वादि
और आराम के लि
दार बिस्तर लगाये

दूसरे दिन सुबह ।
अच्छा अब हम चलते हैं आपका बहुत धन्यवाद ।

यह जानने के लिए कि आगे क्या हुआ आगामी अंक पढ़ना न भूलिये ।

अनाड़ीलाल, जबलपुर (म. प्र.)

प्र० : जिन्दगी के ख्वाब पूरे क्यों नहीं होते ?

उ० : मनचाहे सब नारि-नर अपने स्वप्न सजाएं,
मर्द राष्ट्रपति, नारियां मंत्राणी बन जाएं ।

कमलकुमार भाटिया, बरेली

प्र० : काकाजी, प्रेमी और प्रेमिका में क्या अन्तर है ?

उ० : न्यू फैशन में खो गया काका कवि का ज्ञान,
छोरी, छोरा सी दिखें, छोरा, छोरि समान ।

बल्लराम, गली तेलीवाड़ा, दिल्ली-६

प्र० : लड़कियों पर जवानी जल्दी क्यों आती है ?

उ० : चढ़ी जवानी से मिले पापा को उपदेश,
बीमा की लें पालिसी, हो विवाह पर कैश ।

बालमुकन्द चतुर्वेदी, इन्दौर

प्र० : ऐसी युक्ति बताइये कि गुंडे लड़के, लड़कियों को छेड़ने ही न पायें ।

उ० : हर लड़की के शीश में लग जायें दो सींग,
फाड़ें पेट, निकाल दें मजनूमल की मींग ।

सिंघई सतीशकुमार जैन, जबेरा (दमोह)

प्र० : आप किसी से डरते नहीं, लेकिन काकी के सामने भीगी बिल्ली क्यों बन जाते हैं ?

उ० : चिल्ली जी से पूछ लीजिये,
कभी पहुंच करके न्यू दिल्ली
तीस मारखां मर्द बन गये,
इंदिराजी के आगे बिल्ली

एच. एम. कादरी, सैयद, बीकानेर

प्र० : पत्नी और प्रेमिका में क्या अंतर होता है ?

उ० : मिले प्रेमिका से तुम्हें, टैम्परेरी प्यार
पत्नी, परमानेंट दे, प्यार और फटकार

भीष्म साहनी, बेगमपुल, मेरठ

प्र० : एयर होस्टेज विमान के अन्दर लहरों की तरह क्यों चलती हैं ?

उ० : लहर-लहर लहराय जवानी, दी कुदरत ने छूट,
नाश्ता अब मिलता नहीं, लेउ हुस्न के घूंट ।

यादकुमार सुगन्ध, रेवाड़ी

प्र० : आपको किसी फिल्म में लिया जाय तो कैसा रोल पसंद करेंगे ?

उ० : हीरोजी का रोल यदि आये अपने हाथ
साठ वर्ष की नायिका, हीरोइन हो साथ

आरिफ पानवाले, चाँदपुर (बिजनौर)

प्र० : पैसा ईमानदारी से कमाया जा सकता है या बेईमानी से ?

उ० : मौज कर रहे महल में, बेइमान श्रीमान,
दो रोटी के वास्ते, तरस रहा ईमान ।

प्रकाशचंद कुकरेजा, इंदौर

प्र० : दाढ़ी नहीं बनाने से जो पैसे बचते हैं उन्हें क[illegible] कहाँ रखते हो ?

उ० : पैसे जो बचते रहें, बिना कराये शेव,
नहीं बतायेंगे तुम्हें काट लेउगे जेब ।

जयप्रकाश अकेला, बाँस बेड़िया

प्र० : पहिले महिला वर्ष था, अब महिला दशक है[illegible] आगे क्या होगा काका ?

उ० : महिला 'शतक' होकर मर्दों पर डालती रहेंगी

पाँचुराम छिन्दी, फीरोजपुर कैण्ट

प्र० : अगर पत्नी से ज्यादा खूबसूरत साली हो तो

उ० : क्यों पराये माल पर ललचा रहे मांडू ?
तुम मिमियाते रहो, उसे ले जायगा साढ़ू ।

अजय कुमार, शाहगंज (हुगली)

प्र० : धोबी गधे के पीछे-पीछे क्यों चलता है ?

उ० : कपड़े लेकर के गधा, कहीं भाग ना पाय,
डंडा लेकर इसलिये, धोबी पीछे जाय ।

अनीतकुमार, अबोहर (पंजाब)

प्र० : लड़की क्या बात देखकर किसी से प्यार करती

उ० : कोई सूरत-शक्ल पर हो जाती बलिहार,
कोई दौलत देखकर, करती उससे प्यार ।

शीतल शर्मा किंग्सवे कैम्प—दिल्ली

प्र० : काकाजी, आपका जन्म दिन कब पड़ता है ?

उ० : लिया अठारह सितम्बर को हमने अवतार,
निकल गई तारीख तब पूछ रहे हो यार।

राजकुमार हंसदा, राँची

प्र० : काका, आपकी तन्दुरुस्ती का राज क्या है ?

उ० : हास्य व्यंग्य के रंग में, रहते हैं गतिशील
सुबह-शाम नित घूमते, कम से कम दो मील

अवधप्रसाद गुप्ता, गनपा (इलाहाबाद)

प्र० : पिलपिल और सिलबिल को आप नौकरी पर नहीं रख लेते ?

उ० : चिल्ली के चेले दोऊ, चतुर-चंट कहलाएं,
काका कवि का अपहरण कर चंपत हो जाएं ।

भजनलाल गोयनका, इलाहाबाद

प्र० : थ्री टायर-टू टायर के कुछ टी. टी. फिर से [illegible] लेने लगे हैं ?

उ० : महँगाई सिर पर चढ़ी, गुजर नहीं हो पाय,
नहीं दक्षिणा लेयगें, तनुखा दो बढ़वाय ।

देवीशंकर शुक्ल, कानपुर

प्र० : आपके कारतूस दीवाना में छपते हैं, काकी की क्यों छूटती है ?

उ० : [illegible]ी ऊंची अक्ल है, हमसे भी दो-सूत,
[illegible] झोंक' पुस्तक छपी, काको की करतूत ।

परोपकारी

रोपकारी भैया, मेरी कुछ मदद करो ! एक चोर
न रातों से लगातार मेरे घर में चोरी कर रहा है, मैं तो कंगाल हो गया हूं ।
हैं ? यह तो वहुत वुरा हुआ !

मुझे लगता है यह किसी अन्दर के आदमी का काम है । मुझे एक तरीका समझ में आया है । चलो घर चल के बताता हूं ।

ठीक है न ? चोर इन कांच जेवरों को
वाह !

और गहनों को हाथ लगाते ही रस्सी खिंच जाएगी और उस चोर की फोटो तुम्हारे कैमरे में आ जाएगी। वस अव कल का इंतजार करो।
परोपकारी तुम बड़े समझदार हो !

क्यों वनवारी कैसा रहा कल वाला आइडिया ? फोटो आ गई ?
फोटो क्या आनी थी

मेरा तो आठ सौ का कैमरा भी चला गया। और तुम्हारे कांच के जेवर वैसे के वैसे पड़े हैं । सब तुम्हारी मेहरबानी से ।

ात बेबात की

दो घण्टों से दरवाज़े पर खड़ी किस से बातें कर रही थीं ?

वह अपने पड़ोस की मिसेज़ मलिक थीं, उसे-
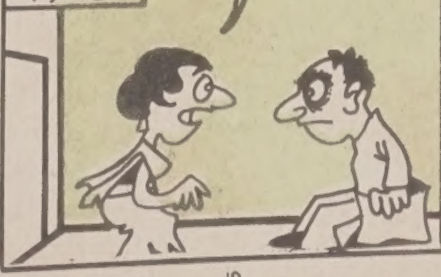
- अन्दर आने का समय नहीं था, इसलिए बाहर ही बातें कर के चली गई !

अर्थ अनर्थ

एक नजर में पढ़िये और दो-दो मजे लूटिये !

मधु धीर-दिल्ली

शेर को देखकर मेरे पैरों के नीचे से जमीन निकल गई ।

निकल कर जायेगी कहाँ भाग कर पकड़ लो।

आलोक रंजन—इलाहाबाद

सुनील दुकानदार को नोट देते हुए, "जरा मुझे तोड़ दो ।"

अभी एक मिनट रुको जरा लाठी ले आऊं ।

छोटा किशन—राजनंद गाँव

यह पहलवान अच्छे अच्छों को दिन में तारे दिखा देता है ।

यह पहलवान है या जादूगर जोदिन में तारे दिखा देता है ।

सुनील भाटिया—नई दिल्ली

"बाबू जी एक दस पैसे का सवाल है" भिखारी बोला ।

एक दर्जन सवाल किस भाव होंगे, यह बता दो ।

देबी प्रसाद तिवारी—कलकत्ता

एक मित्र दूसरे से बोला, "तुम अपने घर का रास्ता नापो ।"

जब नाप चुको तो हमारे घर का भी रास्ता नाप देना ।'

पूनम रानी—राजपुरा टाऊन

"बाबूजी भूख लगी है पैसे दो खाऊंगा," भिखारी बोला ।

पैसे खाओगे या कोई चीज खरीद कर खाओगे ?

तनवीर इकबाल—सहारनपुर

मैंने माँ पिक्चर नहीं देखी सच बताता हूं," राजू अपनी मां से बोला ।

बाकी सब फिल्में देख ली हैं। केवल 'माँ' देखनी बाकी बची है ।

राजेशकुमार जैन—आगरा

"हफ्ते भर के अन्दर तुम्हारे वाला बैड जरूर खाली हो जायेगा ।" डाक्टर मरीज को सांत्वना देता हुआ बोला ।

मरीज के मरने से बैड खाली होगा या ठीक होने से ?

संजय आनन्द कुमार जैन—बम्बई

परीक्षा में आये प्रश्न पत्र पर नीचे लिखा था, "कृपया पीछे देखें ।"

इस प्रश्न पत्र में तो पीछे देखकर नकल मारने की भी छूट दे रखी है ।

सुरेन्द्रपाल सिंह—जबलपुर

माँ बेटे से बोली, "जा बेटे, मेहमानों की चाय बनानी है, मिट्टी का तेल ले आ ।"

क्या घर में पानी खत्म हो गया है । या यह मेहमान नवाजी का नया तरीका है ।

आशिश कालड़ा—नई दिल्ली

एक सज्जन अपने पुत्र से बोले, "बेटा, अपनी मम्मी को बोलो कि मुझे फ्राई करके दाल दें ।"

किसे फ्राई करना है दाल को या......

अजयकुमार सिन्हा—गया, (बिहार)

"भाई साहब, आपकी घड़ी चल रही है क्या ?" छोटे भाई ने पूछा ।

चलेगी कैसे ? मैंने स्ट्रैप अपनी कलाई पर बाँध रखा है ।

रमेशकुमार—उदयपुर (राज.)

"जेलर साहब को अभी-अभी मैंने जेल में जाते हुए देखा है ।" एक पुलिस कर्मचारी बोला ।

क्या जेलर साहब खुद ही सलाखों के पीछे पहुँच गये हैं ?

पी० डी० शर्मा—सहारनपुर

"एक झापड़ में बत्तीसी बाहर निकाल दूंगा ।" एक आदमी दूसरे को धमकाता हुआ बोला ।

क्या दाँतों के डाक्टरों का धन्धा ठप्प करने का इरादा है ?

बलविन्दर सिंह—फिरोजपुर (पंजाब)

इतिहास के मास्टर जी पढ़ा रहे थे, "महाराणा प्रताप को अपने सिंहासन से हाथ धोना पड़ा ।"

उन दिनों साबुन का आविष्कार नहीं हुआ था क्या ?

हरीशचन्द्र अरोड़ा—मण्डी (हि० प्र०)

सुरेन्द्र बाबू अपने बेटे के साथ अपनी सारी जायदाद बेच कर इंग्लैंड चले गये ।

अपने बेटे को भी बेच गये क्या ?

अखिलेश—विक्रम गंज

इस बस का कन्डैक्टर घर से झगड़ कर आता है ।

बेचारे निर्जीव घर का तो बुरा हाल हो जाता होगा ?

विनोद खारीवाल—गंगानगर (राज०)

गब्बरसिंह के ऊपर ५०,००० रुपए का इनाम रखा है ।

उसके सिर पर रखा है, कंधों पर या जेब में, यह और बता दो ।

हरिन्दरपालसिंह सेठी, म० नं० २६४, शाहपुर जाट, नई दिल्ली—११००१६

रेडियो पर विज्ञापन आता है, "मम्मी मम्मी मार्डन ब्रेड ।"

इसका मतलब डैडी पीनट् होंगे जब मम्मी...

राजबीर गुप्ता—चण्डीगढ़

"यार सोहन, आज रात को मच्छर खायेंगे ।" मोहन ने गर्मी के मौसम में कहा ।

क्या अब डिनर में मच्छर भी चलने लगे हैं ।

वेद प्रकाश 'वेद'—तिनसुकिया

परीक्षाएँ निकट आ रही हैं, कमर मजबूत कर लो ।

क्या परीक्षाएँ लट्ठ बरसायेंगी जो कमर मजबूत कर रहे हो ?

सतनाम सिंह—नई दिल्ली

अचानक कमन्ट्रेटर चिल्ला उठा, "बेदी को कैच किया पारकर ने ।"

क्या बाल की जगह बेदी साहब ही उछल पड़े थे जो उन्हें कैच कर लिया ?

सर्वश्रेष्ठ वाक्य

सुरेन्द्र मिगलानी, जीवन भवन, रेलवे रोड कैथल (हरियाणा)

रेडियो पर क्रिकेट कमेन्ट्री आ रही थी—"अब तो बेदी खुल कर खेल रहे हैं ।"

पहले क्या खूंटे से बंध कर खेलते थे ?

सर्वश्रेष्ठ अर्थ-अनर्थ पर 5 रु० का नगद पुरस्कार दिया जायेगा। सं०

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

अर्थ-अनर्थ

दीवाना साप्ताहिक
८-ब बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली—११०००२

क्यों करें फैशन इस लिये...

अाप गलती से उल्टा कोट पहन कर भी बाहर जायें तो बदलते फैशन के कारण लोग अाप पर हंस नहीं पाते।

फैशन बदलते रहने के कारण छोटे भाई-बहनों को बड़े भाई बहनों के पुराने कपड़े न पहनने का बहाना मिल जाता है।
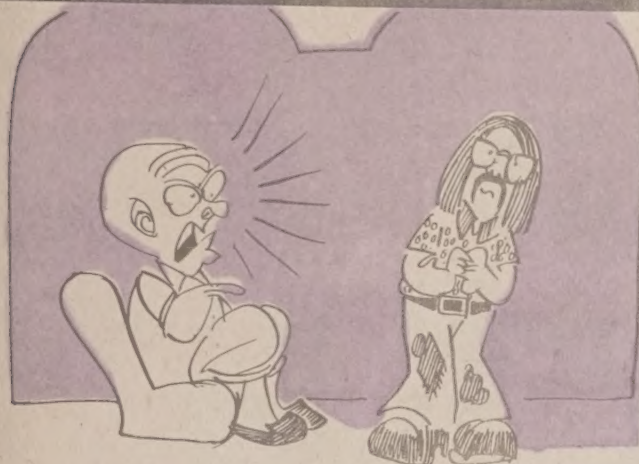
बुजुर्गों को छोटों के फैशन के खिलाफ भाषण देने का अवसर मिलता है इससे उनके फेफड़ों की कसरत होती है और टी. वी. होने का खतरा नहीं रहता।

फैशन खर्चीला शौक है। मां-बाप के ब्लैक के पैसे ठिकाने लगाने का अच्छा साधन है।

टेलरिंग शॉप को अपने दर्जियों को फैशनों से अवगत कराने के लिये पिक्चरें दिखानी पड़ती हैं। दर्जियों का मुफ्त में मनोरंजन हो जाता है।

फैशनों के कारण पुराने फैशन के कपड़े बेकार हो जाते हैं जिन्हें गृहणिया स्टेनलैस स्टील के बर्तनों से बदलवा कर किचन की शान निरन्तर बढ़ाती जाती हैं।

सोमा

बिजली के प्रखर प्रकाश से आलोकित कक्ष का परदा पवन के झोंके से लहराया। प्रकाश की एकतीक्ष्ण किरण बगिया के घने अन्धकार को बेधती हुई विलीन हो गई। आम्रशाखा पर बैठे उलूक ने खिलखिलाकर अपने साथी से कहा—'देखते हो! ये अपने को मानव कहते हैं।'

अपने-अपने नीड़ में छिपे पंछी, उस कर्कश स्वर को सुन सहम-सहमकर और भी सिमट गये। फूंस की कोठरी में सोती हुई माली की पत्नी ने अनजाने ही अपने नन्हें से शिशु को अपने अंक में समेट लिया।

पहरे पर ऊँघते चौकीदार ने कांपकर, राम-राम का उचारण किया। निद्रालस नयनों को किसी प्रकार खोल वह उठा और घड़ी देखी। झूमते-झामते उसने कोठी का एक चक्कर काटा, पुनः अपने स्थान पर आ आलस हाथों से, गिन-गिनकर घण्टे बजाने लगा।

एक…दो…तीन…बारह।

बारह बज चुके थे। पर खन्ना दम्पत्ति के घर इस समय भी ताश की बैठक जम रही थी।

फलाश खेला जा रहा था। अठन्नी की चाल थी। पल-पल में वारे-न्यारे होते, क्षण-क्षण में बाजी पलटती। खिले हुए मुख मुर्झा उठते, मुरझाये हुये खिल जाते।

खेल समाप्त होने के अभी कोई लक्षण न थे। जीतने वाला सोचता—इस बार मैं और अधिक जीतूंगा। हारने वाला अपने दिल को ढाढ़स—हार गया तो क्या, अब की बाजी मेरे हाथ ही रहेगी।

हर आध घण्टे बाद ड्योढ़ी पर बैठा सिपाही घण्टा बजा देता। दूर सड़क पर गश्त करते पुलिसमैन की सीटी रह-रहकर बज उठती—हुर्र…हुर्र…हुर्र…!

पत्ते बँटे जा रहे थे—एक…दो—तीन। समीप ही कहीं सड़क पर पुलिसमैन की सीटी बोल उठी—हिर्र…हिर्र…हुर्र्र्र…

"माथुर साहब घूम रहे हैं।" अनुपस्थित सुपरिटेंडेण्ट पुलिस को लक्ष्य कर बाजपेयी बोले।

शिष्ट समुदाय का परिहास ठहरा। हँसी न आने पर भी सब खिलखिलाकर हस पड़े।

घोष बाबू ने अपने पत्ते समेटे। मुख पर हाथ रखकर जम्भाई ली—"नींद-सी आने लगी। मिसेज खन्ना, चाय पिलवाइये ना!"

"नहीं, नहीं। चाय नहीं, कॉफी।" एक और साहब बोले।

"हाँ, हाँ, चाय तो अभी बनी ही थी।" किसी और ने उनका समर्थन किया।

पत्ते नीचे रख, श्रीमती खन्ना ने हलके से ताली बजाई। साथ ही पुकारा भी—"शेर-सिंह!"

यह दोहरा आवाहन शेरसिंह के कानों में न पहुंचा। बैठे-बैठे वह सो गया था।

दो क्षण प्रतीक्षा कर उन्होंने फिर पुकारा—"शेरसिंह! ओ शेरसिंह!"

शेरसिंह की नींद न टूटी।

मि० खन्ना क्रुद्ध हो गरज उठे, "शेर-सिंह! अबे ओ''शेरसिंह! ओ शेरसिंह!" कैसा नौकर है!" वह बड़बड़ाये—"हम जाग रहे हैं, बाबू साहब पड़कर सो गये!"

सभ्य मालिक की स्नेहभरी पुकार शेर-सिंह के कानों में पहुंची थी। आँखें मलते हुए वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ था।

कमरे में घुसते हुए सम्मानपूर्वक बोला—"जी हुजूर!"

"देखो शेरसिंह!" स्वामित्व-भरे, अधिकारपूर्ण स्वर में श्रीमती खन्ना ने आदेश दिया—"तेरह प्याले कॉफी बना लाओ। एक प्याला चाय जल्दी!"

"जी, हुजूर!" उसने कहा, और निःशब्द ही कमरे से बाहर निकल आया।

द्वार पार करते ही उसने अपने मोटे-मोटे होंठ गोल किये, आंखें जरा मींचकर गाल फुलाये और मालकिन की नकल उतारते हुए कहा—"तेरह प्याले काफी, एक प्याला चाय, जल्दी!"

हूँह, रात-रात भर ताश खेलते हैं। दिन-दिन भर पड़े सोते हैं। इनसे तो उल्लू अच्छे, उल्लू!

उसके खीभ भरे चेहरे पर आमोद की रेखा दौड़ गई।

हीटर पर पतीली चढ़ी हुई थी। उसने स्विच दबा दिया।

पहले पी गई चाय के प्याले अभी तक यों ही लुढ़क रहे थे। इस कँपकँपाती शीत-भरी रात्रि में, बर्फ से शीतल जल में हाथ डालने का साहस उस पहाड़ी छोकरे को भी न हुआ।

प्यालों की बची-खुची चाय नीचे फेंक, उसने उन्हें झाड़न से रगड़ा और ट्रे में सजा दिया।

यह भी कोई नौकरी में नौकरी है—काफी बनाते समय वह मन-ही-मन सोच रहा था—न रात-भर सोने को मिले, न दिन में आराम मिले। मैं ही हूं, जो टिका हुआ हूं। और कोई होता तो कब का भाग गया होता।

कॉफी, बिस्कुट, केक इत्यादि पहुंचाकर वह फिर पैण्ट्री में लौटा। तीन भाग दूध में एक भाग पानी मिला उसने अपने लिये चाय बनाई। केक का एक बड़ा-सा टुकड़ा हाथ में ले, वह सड़प-सड़प कर चाय का आनन्द लेने लगा।

जब वह कमरे में लौटा, तब तक अधिकांश लोग चाय-पान कर चुके थे। बिखरे प्याले समेट, वह नल के नीचे डाल आया। पुनः अपने स्थान पर आकर लेटा ही था कि उसकी नाक बजने लगी।

कमरे में खेल पूर्ववत् चलता रहा। भाग्य साथ बदलता रहा। मन का विषाद मन में छिपा, मुखड़े मुस्कराने का प्रयास करते रहे। मन का उल्लास, मन में दबा, मुखड़े गम्भीर बनाने का प्रयत्न करते रहे।

बाहर चौकीदार का घण्टा बज उठा—एक-दो।

श्रीमती वाजपेयी चौंक गयीं—"अरे, दो बज गये। बस भई, मैं तो चलती हूं। मेरा तो छोटा-सा बेबी है।"

"अरे, बैठिये भी।" अहमद साहब बोले—"आया तो होगी उसके पास?"

"जहाँ जरा देर हुई कि वह कमबख्त पड़कर सो जाती है। उस बेईमान का तनिक भी विश्वास नहीं।" वह बोलीं।

"हाँ भई, अब खतम ही करो। मि० घोष भी बोले—"हमें भी सवेरे ही दौरे पर जाना है। जल्दी उठना होगा।"

वाजपेयी हँसे—"जल्दी यानि नौ बजे? अरे म्याँ, हम सब समझते हैं।"

सब हँस पड़े। खन्ना ने कहा—"बस, एक अन्तिम बाजी और हो जाये।"

श्रीमती वाजपेयी फिर बैठ गयीं।

मित्तल हिसाब जोड़ रहे थे। बोले—"वाह मिसेज खन्ना, आज तो आपका सितारा खूब चमका। चौंसठ रुपये जीती हैं आप, चौंसठ!"

श्रीमती खन्ना को पता था कि वह जीत रही हैं। पर इतने की न उन्हें आशा थी, न उन्होंने कल्पना ही की थी। गर्व से फूलकर बोलीं—"अरे, यह तो कुछ भी नहीं। हारा भी तो करती हूं सौ-सौ रुपये।"

"और हम, हमारा क्या हाल है भई।" चार-छः व्यग्र आवाजें एक साथ उठीं।

"आज तो बाजी मेजबानों के ही हाथ रही।" मित्तल खन्ना साहब की पीठ पर हाथ मारते हुए बोले—"तुम दोनों ही भाग्यशाली हो दोस्त, तुम बावन रुपये जीते हो।"

खन्ना खिल गये।

श्रीमती खन्ना मन-ही-मन सोच रही थीं...चौंसठ और बावन, एक सौ सोलह, इतने में एक साड़ी तो आ ही जायेगी।

खन्ना अलग मन के लड्डू फोड़ रहे थे—"एक सौ सोलह, इतने में एक सूट तो बन ही जायेगा।"

श्रीमती माथुर बोल उठीं—"सन्ध्या को घर से निकली थी तो यह सोचा ही नहीं था कि इतनी देर हो जायेगी। कोई शाल होगा, मिसेज खन्ना?"

"अरे वाह, मिसेज माथुर! क्या बातें करती हैं आप भी! मेरे घर से दुशाला लपेटकर जायेंगी आप? शेरसिंह! जरा मेरा लाल कोट तो निकाल लाना अलमारी में से।"

चलने-चलाने के कोलाहल में शेरसिंह की नींद टूट गयी थी—किसी तरह ये बलायें टलीं तो—मन-ही-मन सोच रहा था।

"जी अच्छा!" उसने कहा, और तत्क्षण चल दिया।

दूसरे ही क्षण उसकी हृदय-विदारक चीख की ध्वनि सुन, सभी के दिल दहल गये।

इधर-उधर देख, खन्ना ने कार्निस पर रखी अपनी पिस्तौल हाथ में सँभाल ली। जो अतिथि बरामदे तक पहुंच गये थे, वे भयभीत हो लौट पड़े।

पहरे पर बैठा सिपाही अपनी बन्दूक संभालते आ पहुंचा—"क्या बात है, साहब? क्या हुआ, हुजूर?" निस्तब्धता में उसकी वाणी गूंज उठी।

और तभी बदहवास शेरसिंह दौड़ते हुए आ पहुंचा। आते ही चीखा—"गजब हो गया, हुजूर।"

उसे सही-सलामत देख सबकी रुकी हुई साँस मानो लौट आई।

"हुजूर के बच्चे!" खन्ना दहाड़े—"खड़ा-खड़ा काँप क्या रहा है! कहता क्यों नहीं क्या हुआ?"

"बॉक्स-रूम खाली पड़ा है, हुजूर।"

"ऐं!"

"जी हाँ साहब, सब चोरी हो गया। कुछ भी नहीं बचा।"

उपस्थित जनों को मानो पाला मार गया।

आगे-आगे खन्ना चले। पीछे-पीछे और सब।

बाक्स-रूम सच ही सूना पड़ा था। जिन ईंटों पर बक्स रखे थे, उनके अतिरिक्त वहां और कुछ भी शेष न था। ईंटों के बीच में, दीवार के किनारे-किनारे, कूड़ा इकट्ठा हो रहा था। फर्श पर बिछे मोटे पर्शियन कालीन के स्थान पर धूल की मोटी-सी तह बिछी हुई थी।

खन्ना साहब के शरीर में मानो किसी ने अनगिनत कीलें ठोक दीं। श्रीमती खन्ना के नयनों में अश्रु छलक आए।

मिसेज माथुर, मिसेज भल्ला के कानों में फुसफुसा रही थीं—"क्या डींग हांका करती थी! क्या नाज़ था इन्हें अपनी सफाई-पसन्द तबियत का! आज पोल खुल गयी न। देख लो, यही है इनकी स्वच्छता!"

मि० वाजपेयी घोष बाबू के कानों में कह रहे थे—"कमिश्नर होकर इनके घर चोरी हो गयी, तो हम साधारण लोगों की क्या बात!"

मुख पिचकाकर घोष बाबू ने गर्दन हिलाई। बोले—"मैं तो भाई इसीलिए घर में कुछ रखता नहीं। सब बैंक में। श्रीमती जी बहुत बिगड़ीं भी, कि चीज के होने से क्या फायदा यदि काम न आए, पर मैंने एक न सुनी। आज वे यहां होतीं तो उनकी आंखें खुल जातीं।"

बाहर पहरा बदला। नए सिपाही ने घण्टा बजाया—एक-दो-तीन।

दूर सड़क पर गश्त करते पुलिसमेन ने पुनः अपना संगीतमय राग छेड़ दिया था—हिर्र-हिर्र-हुर्र-र्र-र्र। ●

पैंग्विन
शाल ओढ़े एक स्त्री
कांटे से खाना खाता आदमी
बाज
फैशन की जड़ें!
क्या आपने कभी सोचा है कि आजकल चलते ये फैशन कहां से आये ? आदमी ने कहां से यह सब सीखा ? जरा इन चित्रों को देखिये खुद समझ आ जायगा।
सैंडिल
घोड़े का खुर
जूड़ा
गागल
उल्लू
घोंघा
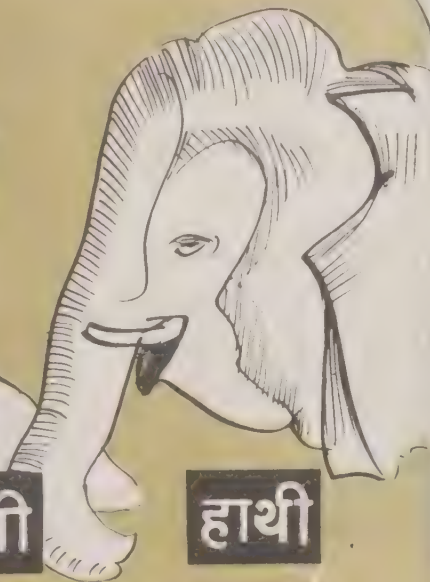
घोड़ी की पूंछ
चोटी
पाइप पीता आदमी
हाथी
मुर्गा
मुकुट
नाइटी
गोल्डफिश
हिप्पी
हिप्पो पोटेमस
बेल बाटम
मांगरेल कुत्ता
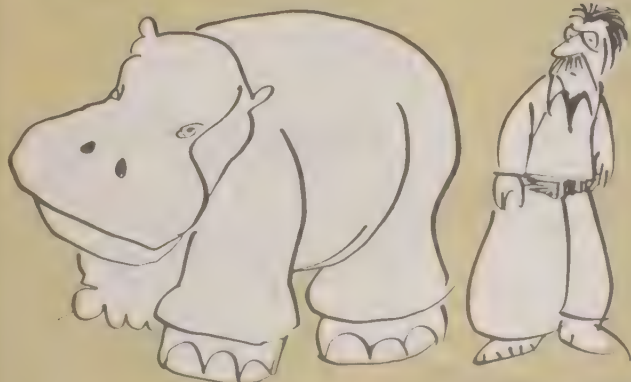
पिलपिल सिलबिल
मध्य प्रदेश के जंगल में शैतान वैज्ञानिक का खात्मा करने के एवज में सरकार से पिलपिल-सिलबिल को जो रकम मिली उसे मिलते ही दोनों ने टूटी टांग वाली कुर्सी पर हाथ रख कर कसम खाई कि जब तक ये पैसे ठिकाने नहीं लगते वे काम नहीं करेंगे और दोनों गरीब चन्द चूहे को लेकर गोवा चले गये और इस समय कनन गेड बीच पर धूप सेंक कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं।
एक पुलिस वाला आ रिया है याड़ियो।
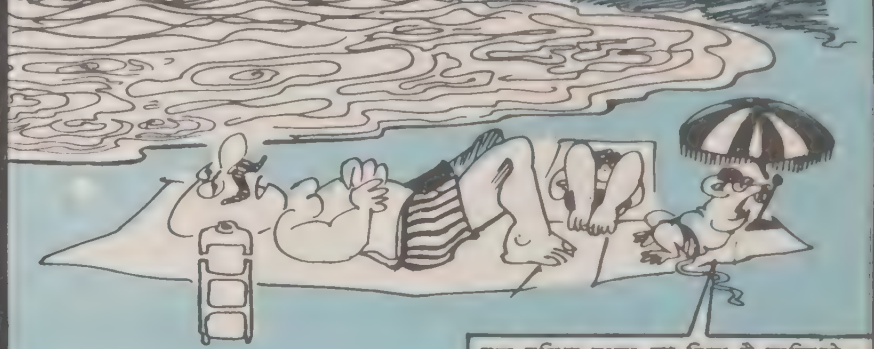
आपका ही नाम पिलपिल और सिलबिल है ?
हौर किसका नाम पिलपिल-सिलबिल हो सकता है ? सारे हिन्दुस्तान में एक हम ही तो सूरमा इस नाम के हकदार हैं। हर कोई अपना नाम बोना पार्ट नेपोलियन रख सकता है ?
आपके नाम एक मैसेज आया है दिल्ली से।

क्या संदेश है ?
संदेश है, "नत्थू की भैंस ने दो मुंह वाला कटड़ा पैदा किया है। कटड़ा तुम्हें बहुत याद करता है, काली दिल्ली ?"

कटड़ा हमें याद करता है ? काली बिल्ली ? कुछ समझ आया ?
कटड़े को कहो कि याद करना है तो हिस्ट्री, जुगराफिया याद करे, नम्बर ज्यादा मिलेंगे। हमें याद करने से क्या होगा ?
चलो कोई तो थारे को याद करता है !

बाद में गरीब चन्द चूहा उन्हें बताता है कि पिछले मिशन के समय केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के डायरेक्टर ने उन्हें बताया था कि भविष्य में उन्हें उनकी आवश्यकता पड़ेगी तो कोड मैसेज भेजेंगे कि नत्थू की भैंस ने दो मुँह वाला कटड़ा दिया है। तुम्हें याद करता है—काली बिल्ली।
तीनों उसी दिन दिल्ली वाले जहाज में सवार हो जाते हैं।
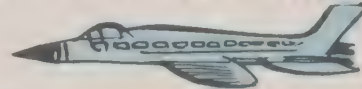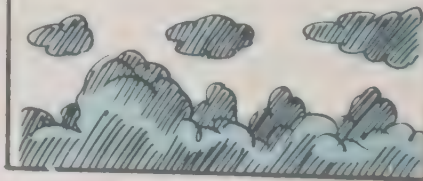
म्हारी छुट्टियां खराब हो गयीं।
क्या करें ? गौरमेंटी आर्डर है। हम नहीं आयेंगे तो वह म्हारे राशन कार्ड पर चीनी का कोटा कम कर देंगे।

माशा अल्लाह, माशा अल्लाह मिर्जा हमामदीन तुम कब आये भई लखनऊ से?

आदाव अर्ज है नवाव साहव! कल ही आया हूँ हुजूर, आपकी दुआ से मिजाज कैसे हैं?

आपकी दुआ है मिर्जा! वैसे तो जमाना वह नहीं रहा मिर्जा, जाने खुदा की क्या कहर हो रही है वह पुरानी तहजीब ही नहीं रही। वह नवाबी दिन नहीं रहे, अब तो मियां बस जैसे-तैसे करके दिन काट रहे हैं खुदा-खुदा करके दिन भर झख मारते रहते हैं मिर्जा! पहले वह हमारे शबाब के दिन थे दिन भर कबूतर, मुर्ग लड़ाया करते थे, शेरो-शायरी के दौर चलते थे, महफिलें जमा करती थीं... अब तो उफ! उफ! उफ! लाहौल विला कूवत यह खांसी?

नवाब साहब, याद मत दिलाइये उन बातों को अल्लाह! क्या जांबाज मुर्ग हुआ करते थे उन दिनों में! वह तेज! वह तेवर! वह पैंतरे!

आदाब अर्ज हैं।

अभी मैसज मिला है कि हिन्दुस्तान फुटवाल टीम का मैनेजर कल सैंट्रल इटेलीजेंस के दफ्तर गया था. जरूर कोई गुप्त संदेश ले जा रहा है हमें उसकी तलाशी लेने के लिये हुक्म मिला है

सिलबिल पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आपके पत्र

अपना कीमती समय नष्ट न कीजिए अपने दीवाने सुझाव हमें लिख भेजिये।

दीवाना का ताजा व नया अंक ४६ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखकर सारे परिवार के लोग हंसते रहे। 'देश में खेल-कूद की उन्नति के दीवाने नुस्खे', 'सिलबिल-पिलपिल', 'खेल-खेल में', 'मोटू-पतलू', व 'क्रिकेट का मजा' बेहद पसन्द आये। पैरोडी फकीड़ा भी अच्छी रही। नया उपहार बतख का खेल भी पसन्द आया। क्या आप चाचा चौधरी रंगीन नहीं दे सकते? अगले अंक की प्रतीक्षा है।

हेमन्त कुमार गुप्ता—पक्की सराय, अलीगढ़

हो सकता है कुछ समय पश्चात् चाचा चौधरी को हम और रंगीन कर दें—सं.।

दीवाना का अंक ४७ मेल की तरह दौड़ता हुआ गोद में आ गिरा। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को देखकर बड़ा आनन्द आया।

बालों के नए दीवाने उपयोगों को देख कर व पढ़कर लगा कि भारतीय जनता अगर इन उपयोगों का सदुपयोग करे, तो भारतीयता को देखकर सभी देश टापते रह जायेंगे व भारत प्रगति के उच्च द्वार पर खड़ा हो जायेगा।

संजय किशोर श्रीवास्तव—लश्कर, ग्वालियर

दीवाना का अंक ४७ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखकर जो हंस छुटी तो फिर घर पहुंच कर ही रुकी। बुद्धि में चाचा चौधरी का जवाब नहीं। सिलबिल-पिलपिल तथा मोटू-पतलू दीवाना में इस प्रकार जड़े हुए हैं जिस प्रकार एक सोने की अंगूठी में नग। बालों के नये दीवाने उपयोग भी अच्छे लगे। 'मनोरंजन स्ट्रीट' नियमित रखें। 'आंधी का आम' कहानी बहुत भावपूर्ण लगी। कृपया फैन्टम बन्द कर दें। ये बहुत बोर करने लगे हैं।

रमेश चन्द शर्मा—हसनपुर जागीर, बु. शहर

शाम को फुटबाल खेल कर थका हुआ बुक स्टाल पर पहुंचा तो दीवाना का ४६ वां अंक देखकर थकावट दूर हो गयी। मुख पृष्ठ तथा बत्तख का खेल बहुत अच्छा लगा। आपसे अनुरोध है कि इसी तरह खेल-कूद अंक निकालते रहें।

विनोद गप्ता—तपकरा, (म. प्र.)

दीवाना का अंक प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर 'बाल-दिवस' मनाते हुए दीवाना के प्रिय कलाकारों को देखा। 'जिद' की पैरोडी का आप 'गिद्ध' कर देते तो अच्छा रहता। अगले अंक में 'संग्राम' की पैरोडी निकालें तो वंडरफुल रहे। मोटू-पतलू के साथ दौलत राम हरदम के लिए शामिल हो गया कि चन्द दिनों के लिए। अगर मोटू-पतलू को दौलत राम से तकलीफ है तो कहिए मैं फौज भेज दूं।

—समीर कुमार अखौरी शेरघाटी (गया)

दौलत राम जी तो कुछ समय के मेहमान हैं। सं०

दीवाना का अंक ४८ मिला। पढ़ कर असीम खुशी हुई जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। आपके नए-नए चित्रों को देखकर बहुत हंसी आती है, चाचा चौधरी, मोटू और पतलू तथा घसीटा राम के कारनामे सचमुच बहुत अच्छे लगते हैं। 'दृष्टिदान' कहानी बहुत अच्छी लगी। इस अंक के 'दीवाना की दीवानी' बहुत अच्छी लगी। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी ऐसी रोचक बातें प्रकाशित होती रहेंगी।

—सतीश एबट, लुधियाना

रंग भरो प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता दो भागों में विभाजित है। पहला भाग ८ साल की आयु से १४ साल की आयु तक, और दूसरा भाग १५ साल की आयु से ऊपर के सभी पाठक।

आप भी जल्दी रंग भर कर भेजिये, अपनी आयु व पता सही-सही लिखें। यदि आप चाहें तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं। हर कूपन में अपना नाम, पता व आयु लिखना न भूलें।

दोनों भागों में पहला, दूसरा व तीसरा इनाम दिया जाता है।

अंतिम तिथि २३ दिसम्बर

नाम ____________

पता ____________

____

____________ आयु ______

"पिछले दिनों मोटू-पतलू और चेला राम राकेट केन्द्र की रक्षा सेना में भरती हो गये थे। उनका काम था बीमगन की रक्षा करना। बीमगन के बारे में उन्हें बताया गया था कि यह एक खतरनाक उपकरण है। इसकी तेज़ और शक्तिशाली किरणें मंगलग्रह तक जाकर और उससे टकरा कर धरती पर वापस आती हैं और ग्रह के बारे में हर प्रकार की सूचना देती हैं। चाँद से चौगुनी दूर तक कोई चीज़ बीम के बीच में आ जाए तो वह जलकर भस्म हो जाती है। चाँद से इसकी किरणें टकरा जाएं तो भयंकर भूकम्प की सी स्थिति चाँद की सतह को उथल-पुथल कर सकती है। संसार भर में अपने प्रकार की यह एक ही बीमगन है जिसे "सीक्रेट एक्शन" नाम का एक गैंग चुराना चाहता है। इस गैंग के जासूस राकेट केन्द्र में भी घुसे हुए हैं। "सीक्रेट एक्शन" के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कर मोटू-पतलू और चेलाराम बीमगन के केबिन का पहरा देने में लग गये थे"। उसी रात एक हवाई जहाज से कूद कर "सीक्रेट एक्शन" के एजेंट पैराशूट द्वारा राकेट केन्द्र में उतर आए थे और उन्होंने बीमगन के केबिन का दरवाज़ा तोड़ दिया था। घसीटाराम जी भी बीमगन चुराने के चक्कर में राकेट केन्द्र पहुंचे थे और पकड़े गये थे। अब आगे की कहानी देखिये, पढ़िये और अपने प्रिय कलाकारों की जान को दुआएं दीजिये।
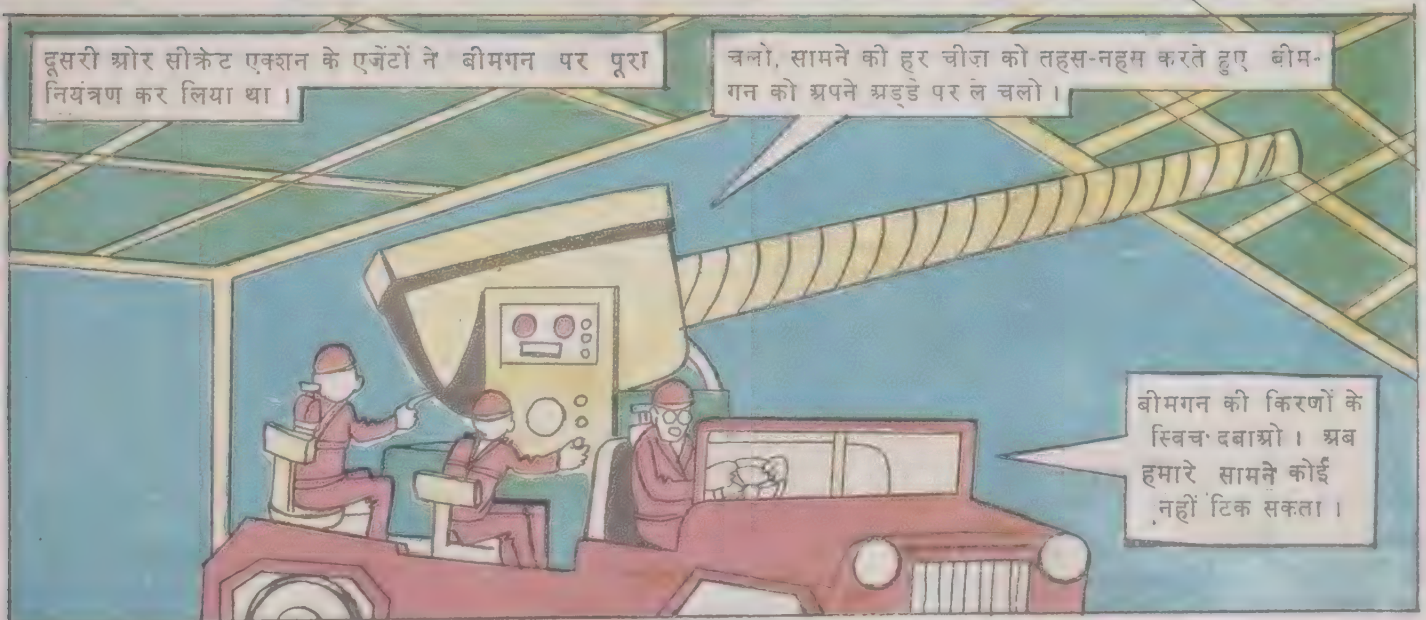
इस छीना-झपटी में भी दुश्मनों के एजेंट बीमगन के स्विच आन करने में सफल हो गये थे ।

और बीमगन अपने सामने की हर वस्तु को तहस-नहस करती, फूंकती, जलाती, तोड़फोड़ करती राकेट केन्द्र से बाहर निकल रही थी ।

मैं इसके बैरल को ऊपर उठाए रखूंगा -नहीं तो इसकी शक्तिशाली करणें पूरे राकेट केन्द्र को तबाह कर देंगी ।

ले, तेरी तो छुट्टी हो गई एक ही बार में ।

मोटू के लिए बीमगन की बैरल को अधिक समय तक ऊपर उठाये रहना कठिन था। उसकी तेज़ गर्मी से मोटू का सर चकरा गया।

बन्दूक के बट की चोट खाकर नीचे गिरा हुआ पतलू घबरा कर उठा और सहायता के लिये चिल्लाता हुआ एक ओर भाग लिया।

जाने किस कलपुर्जे की खराबी के कारण बीमगन के मुंह से निकलती किरणें अचानक गायब हो गईं।

राकेट केन्द्र के फ़ौजी दस्ते पास आ रहे हैं और बीमगन में जाने क्या गड़बड़ हो गई है।
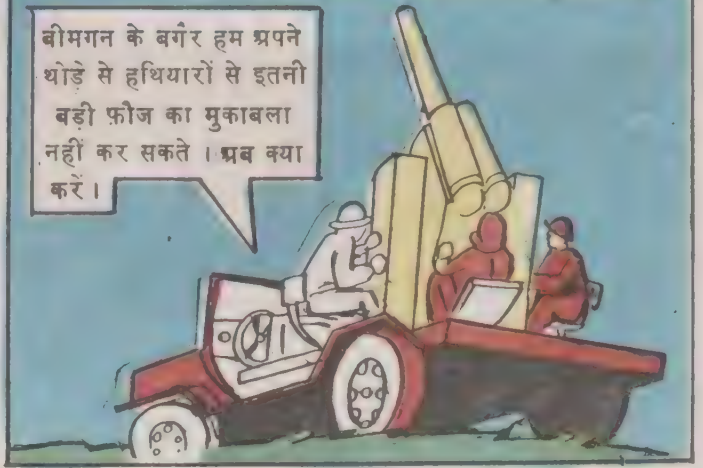
तभी आकाश में एक हैलिकोप्टर दिखाई दिया।

गोली मत चलाओ। अगर हैलिकोप्टर नीचे गिरेगा तो मोटू भी मारा जाएगा।
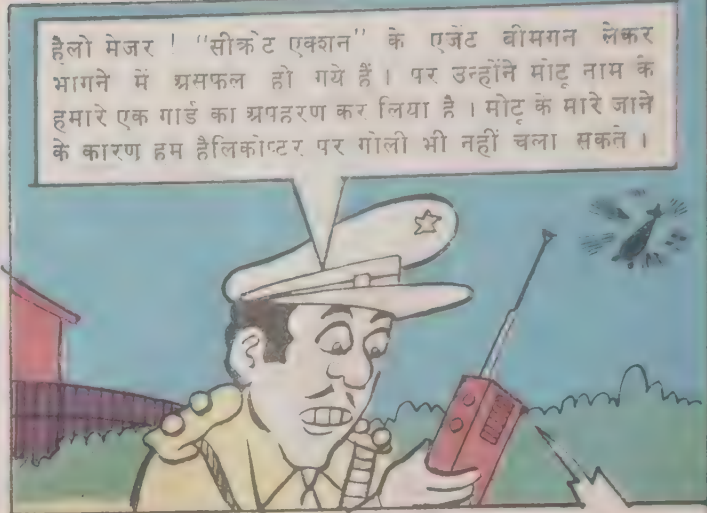
हैलो मेजर ! "सीक्रेट एक्शन" के एजेंट बीमगन लेकर भागने में असफल हो गये हैं। पर उन्होंने मोटू नाम के हमारे एक गार्ड का अपहरण कर लिया है। मोटू के मारे जाने के कारण हम हैलिकोप्टर पर गोली भी नहीं चला सकते।
हैलिकोप्टर का पीछा करने के लिये हमारे जहाज़ उड़ान भर रहे हैं।
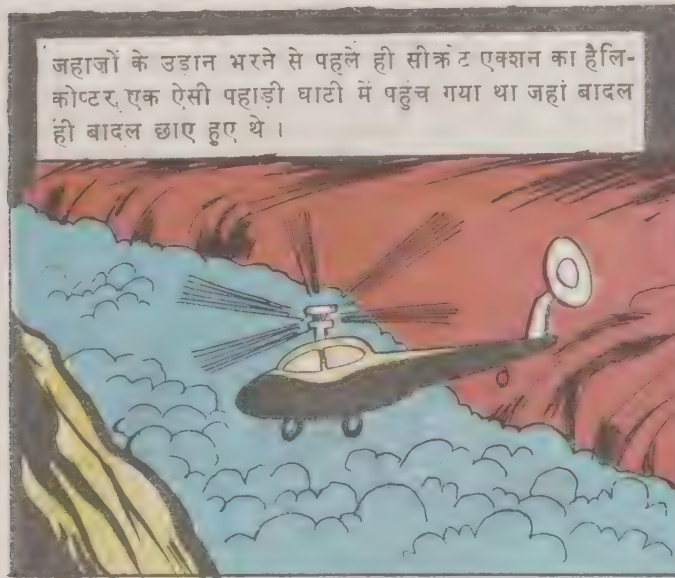
जहाज़ों के उड़ान भरने से पहले ही सीक्रेट एक्शन का हैलि-कोप्टर एक ऐसी पहाड़ी घाटी में पहुंच गया था जहां बादल ही बादल छाए हुए थे।
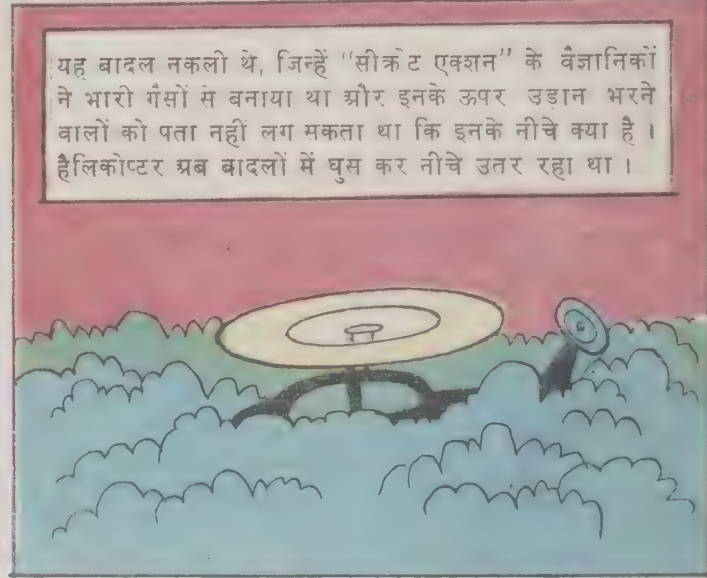
यह बादल नकली थे, जिन्हें "सीक्रेट एक्शन" के वैज्ञानिकों ने भारी गैसों से बनाया था और इनके ऊपर उड़ान भरने वालों को पता नहीं लग सकता था कि इनके नीचे क्या है। हैलिकोप्टर अब बादलों में घुस कर नीचे उतर रहा था।

उड़ान भरने वाले सरकारी जहाज़ बादलों के ऊपर से गुज़रे तो वहां हैलिकोप्टर का कहीं पता नहीं था।
पता नहीं कहां भाग गया हैलिकोप्टर। यहां बादल ही बादल छाए हुए हैं। हमारे जहाज़ किसी चट्टान से टकरा गये तो एक्सीडेंट हो जाएगा।
चलो, वापस लौट चलो।
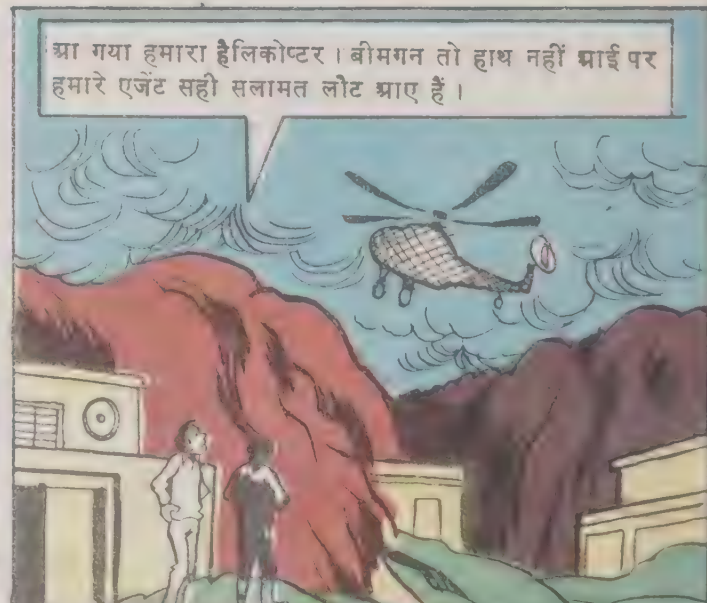
आ गया हमारा हैलिकोप्टर। बीमगन तो हाथ नहीं आई पर हमारे एजेंट सही सलामत लौट आए हैं।
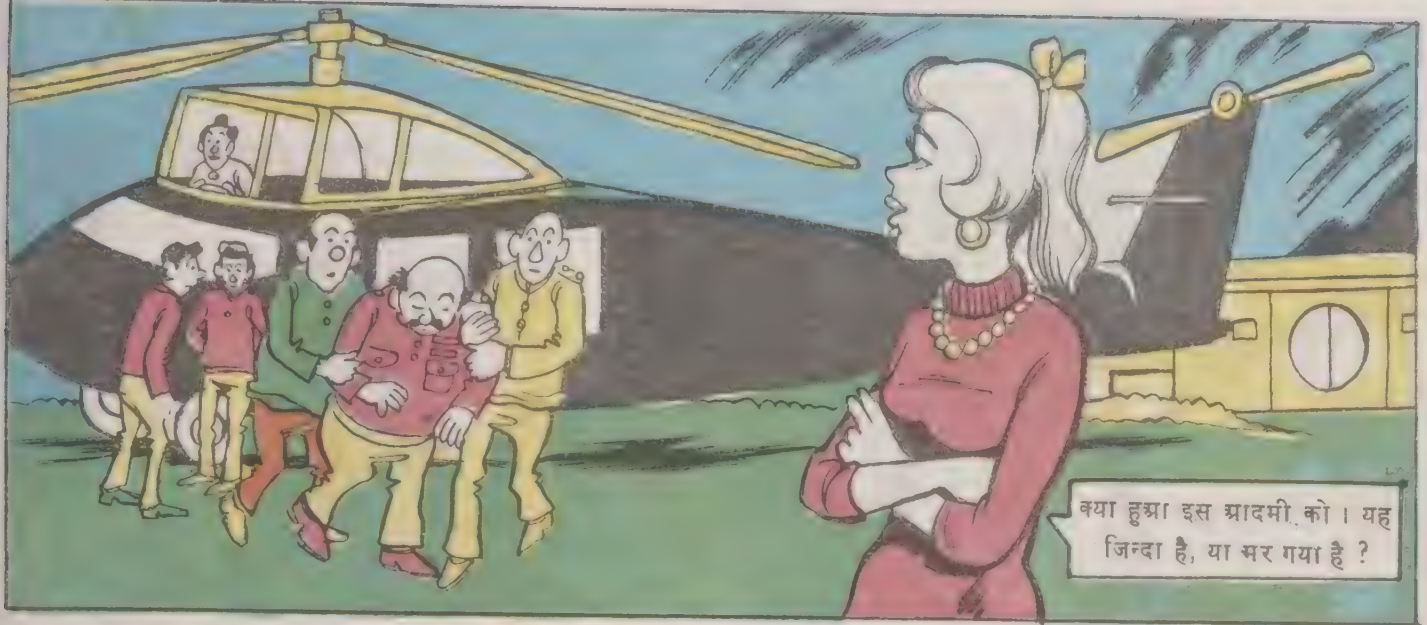
सर ! यह गार्ड बीमगन की बैरल को ऊपर उठाए हुए था । इसे बीमगन का शाक लगा और यह नीचे गिर गया । बीमगन को खराब करने के लिये कोई न कोई स्विच इसी ने दबाया था ।
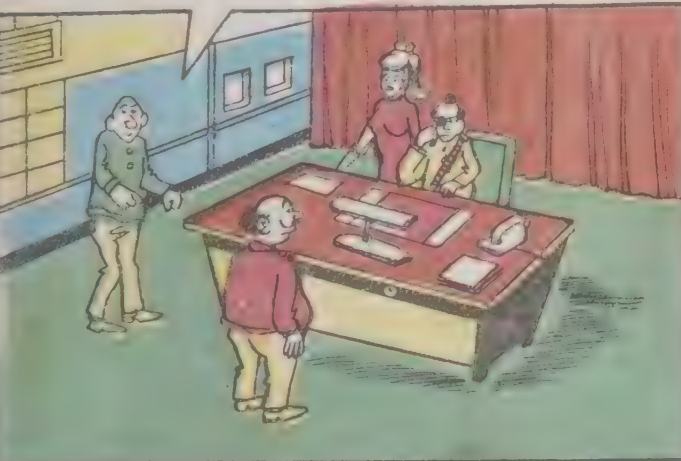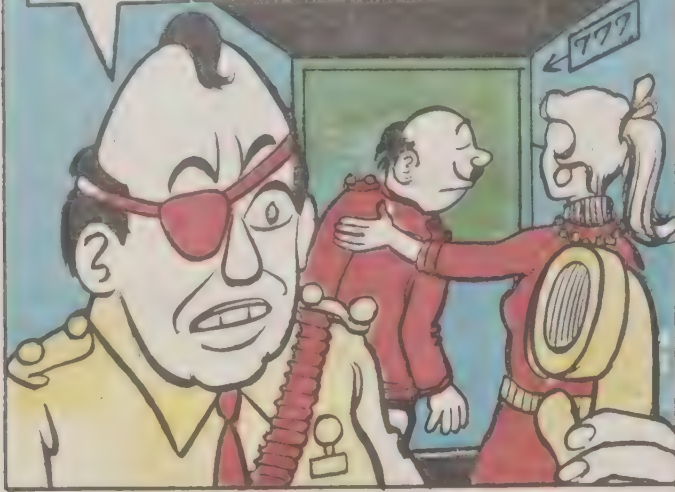
मोटू के दिमाग़ी चैकअप के बाद।
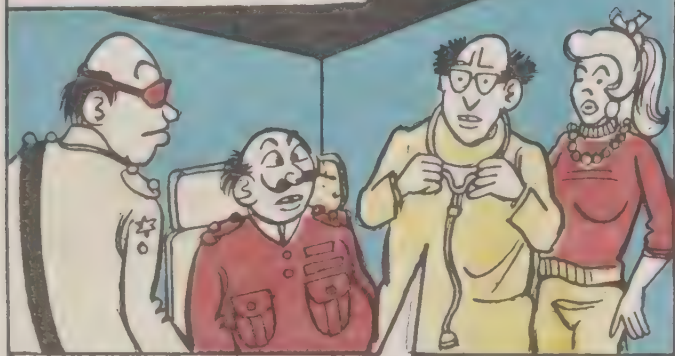
यह आदमी अपने दिमाग़ की पचास प्रतिशत स्मरणशक्ति खो बैठा। कुछ ही दिनों में इसकी दिमाग़ी हालत बिलकुल ठीक हो जाएगी। अगर इसे ज़रा सा भी अधिक शाक लगता तो इसका पूरा जिस्म फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता।

राकेट केन्द्र में गुप्त एलार्म कहां-कहां लगे हैं?
मैं कुछ नहीं जानता । मेरा नाम मोटू है । क्या तुम पतलू हो ? नहीं पतलू की शक्ल ऐसी नहीं है । तुम तो चेलाराम हो ।
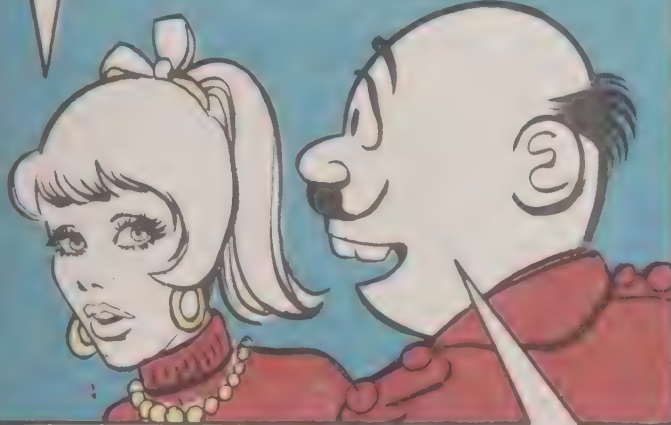
नहीं, मैं डाक्टर झटका हूं । मैं एक राकेट में बैठा मंगलग्रह की यात्रा को जा रहा हूं ।
इसके दिमाग़ पर मेरे अंदाजे से अधिक सदमा पहुंचा है ।
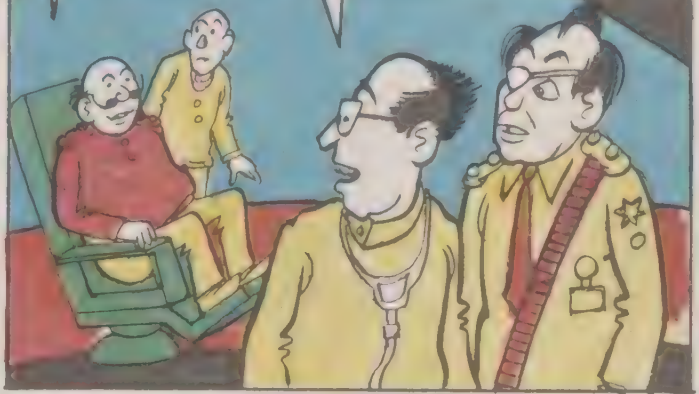
यह आदमी पागल होकर एक दो दिन तक मर जाएगा ।
राकेट केन्द्र के राज़ बताए बगैर इसका मर जाना हमारे लिए बहुत बड़ा नुकसान होगा ।
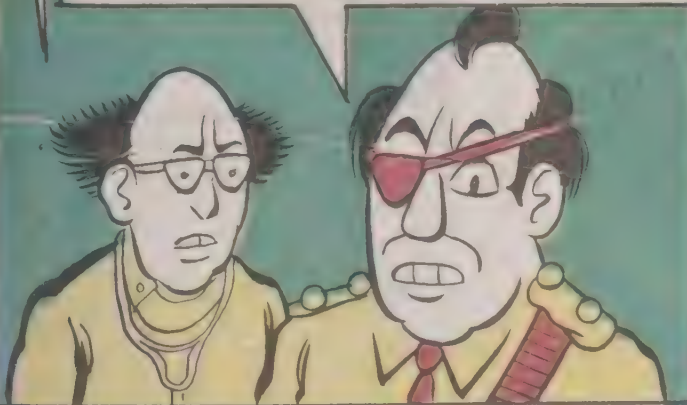
इसके दिमाग की सोचने की शक्ति को किसी नई ओर मोड़ दिया जाए तो इसके जिन्दा बचने की उम्मीद की जा सकती है ।
इसके लिये हम पूरी कोशिश करेंगे ।

तुम्हारा नाम पिंटू है ।
तुम हमारे एजेंट ७७० हो ।
राकेट केन्द्र कमजोर है । उसका नामोनिशान मिटा दियाजाएगा
ताकतवर की जीत होती है । "सीक्रेट एक्शन" ताकतवर है ।

मैं तुम्हारी पत्नी हूं पिंटू । तुम मेरे पति हो । आज हमारे विवाह की वर्षगांठ है ।

वर्षगांठ की खुशी में आज मैं अपने उन साथियों को बहुत बड़ी पार्टी दूंगी जिनके लिए हम दोनों काम करते हैं ।

तुम सीक्रेट एक्शन के सबसे बड़े एजेंट हो । तुम्हें बीमगन चुराने के लिए भेजा गया था ।

तुम उसमें असफल रहे ।

इस बार बीमगन चुराने के लिए तुम्हारी पत्नी तुम्हारे साथ जाएगी ।

नहीं नहीं—! मैं मोटू हूं । इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ याद नहीं है ।
दिल हिला देने वाली इस कहानी का अगला हाल जानने के लिए दीवाना के आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों से मिलना न भूलिये ।
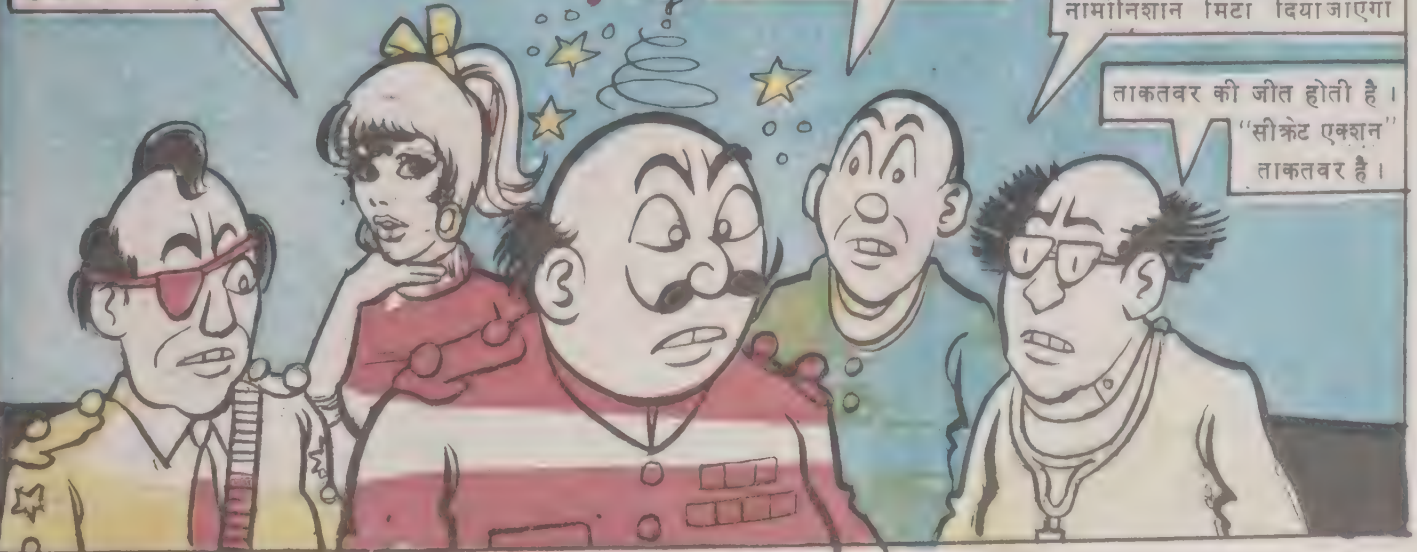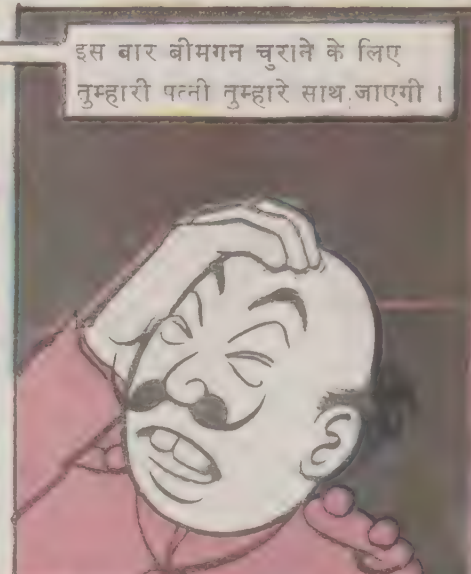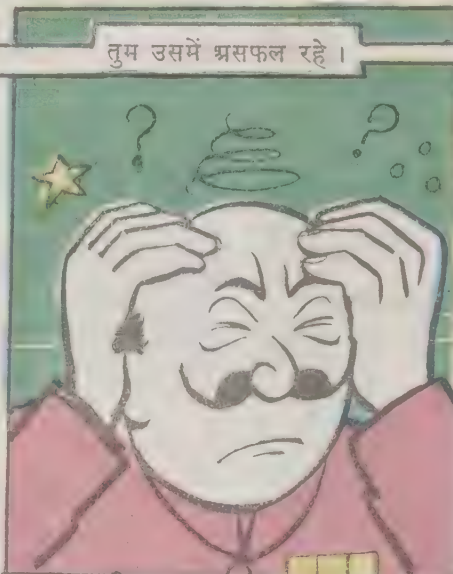
प्र० : आजन्म कारावास की अवधि कब तक रहती है ?

चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर

उ० : आजन्म कारावास का मतलब जन्म पर्यन्त (life long) है। परन्तु जेल में मुजरिम के व्यवहार तथा चाल चलन पर निर्भर करता है कि उसके कारावास की अवधि कितनी कम की जा सकती है।

प्र० : यदि जलते हुए स्टोव के दूसरी तरफ रखी वस्तुओं को आँख द्वारा देखें तो वे हिलती हुई प्रतीत होती हैं। इसका क्या कारण है ?

नरेन्द्र चन्द्र—आदर्श नगर, दिल्ली

उ० : स्टोव की लौ हिलती रहती है। जिस कारण उसके बीच में से देखने से दूसरी तरफ की सभी वस्तुएं हिलती हुई नजर आती हैं।

प्र० : हवाई जहाज के उड़ते समय यात्रियों से बेल्ट बाँधने के लिए क्यों कहा जाता है ? क्या विमान चालक और एयर हास्टेस को भी बेल्ट बाँधनी पड़ती है ? अगर कोई बेल्ट न बाँधे तो क्या होगा ?

अशोक कुमार कटारिया—जबलपुर

उ० : हवाई जहाज के उड़ते या उतरते समय बेल्ट को बांधना इसलिए आवश्यक होता है क्योंकि उस समय हवाई जहाज का रुख ऊपर या नीचे की ओर होता है, जिसके कारण यात्रियों को सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है। दूसरे, जब उड़ते समय हवाई जहाज अशान्त वायु मण्डलीय क्षेत्र में पहुंच जाता है तब यात्रियों को झटके लगते हैं और तभी बेल्ट बांधने के लिए कहा जाता है। एयर होस्टेस तथा पायलट को भी बेल्ट बाँधनी आवश्यक होती है परन्तु चूंकि वे रोज उड़ते हैं। अतः उन्हें आदत पड़ जाती है और वे कभी-कभी बेल्ट के बिना भी अपना काम चला लेते हैं।

प्र० : विमान पर चढ़ने से पहले पैन की स्याही क्यों निकाल दी जाती है ?

अशोक कुमार जैन—बेरमो

उ० : विमान पर साधारण पैन इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि विमान में प्रेशर वायुमण्डलीय प्रेशर के बराबर ही होता है। वायुमण्डलीय प्रेशर होने के कारण ही उसमें यात्री आराम से बैठ सकते हैं, सांस ले सकते हैं और उन्हें पृथ्वी जैसा ही महसूस होता है। विमान के केबिन को इस कारण प्रेशराइज्ड कहा जाता है।

पैन की स्याही इस कारण निकाल दी जाती है कि यदि स्याही ज्यादा भरी हो और प्रेशर में कुछ अन्तर आ जाये तो वह बाहर आ सकती है।

नाम सुझाइये प्रतियोगिता

दीवाना कला विभाग ने चित्र में दिखाये प्रकार का पैंट का डिजायन तैयार किया है। आप इस पैंट का नाम सुझाइये कि क्या नाम रख कर प्रचलित किया जाये। सर्वश्रेष्ठ सुझाव को एक पैंट इनाम।

प्रविष्टि के साथ अपना नाप (पैंट का) भेजें।

नाम सुझाइये प्रतियोगिता
नाम
पता

रहस्य कथा

यांत्रिक दिमाग का रहस्यमय मज़ाक

यंत्र मानव युग

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि महा-यांत्रिक दिमाग द्वारा बनाया यान अचानक ही दिलीप और राजन को लेकर अन्तरिक्ष में उड़ गया। उससे आगे...

अचानक यान में एक आवाज गूंजी जिसने दिलीप व राजन को अपने-अपने विचारों की दुनिया से झकझोर कर बाहर खड़ा ला किया। आवाज किसी एक दिशा से नहीं आ रही थी। लगता था जैसे शब्द हवा में रंगे हों, दिलीप राजन! दिलीप राजन!! दिलीप राजन!!! इस समय तुम कहां हो? तुरन्त रिपोर्ट दो। यान के चालक का पता लगे तो फौरन लौट आओ! दिलीप राजन।"

यही बात दोहराई जाती रही काफी देर तक।

दिलीप ने राजन से पूछा, 'कहाँ से आ रही है यह आवाज?' फुसफुसाहट में राजन ने कहा, 'पता नहीं, यहां सब रहस्यमय है। कहीं बत्ती नजर नहीं आती परन्तु बिजली का भरपूर प्रकाश है। कोई स्पीकर नजर नहीं आता लेकिन आवाज आ रही है।'

'हम उत्तर कैसे दें?' राजन ने उत्तर में अपनी कुर्सी पर से ही गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाना आरम्भ किया, वह अपनी स्थिति बता रहा था। परन्तु दूसरी ओर से वही पुराना संदेश दोहराया जाता रहा। स्पष्ट था कि उनकी आवाज़ वापिस प्रसारित नहीं हो रही थी। चिल्ला-चिल्लाकर थकने पर हांफते हुए राजन ने कहा, 'वे हमारी आवाज नहीं सुन रहे हैं, केवल हमें उनकी आवाज सुनाई पड़ रही है। ध्यान से सुनो यह डा० सुधा की ही आवाज है।'

'हां' दिलीप भी चकित नजर आ रहा था, 'लगता है यहां केवल रिसीवर है, ट्रांसमीटर नहीं।'

धीरे-धीरे सुधा की आवाज धीमी होती गयी और अंत में लुप्त हो गयी। दिलीप व राजन कई मिनट चुपचाप बैठे रहे, फिर राजन ने उठकर खड़े होते हुये कहा, 'चलो, एक बार और यान के सारे केबिन देख लेते हैं। कहीं कुछ खाने-पीने का सामान तो होगा, उसकी आवाज में आशा की झलक नहीं थी, हारे जुआरियों की सी चाल से वे गैलरी में आकर कैबिनों की ओर मुड़े। दोनों भिन्न-भिन्न दिशाओं में अगल-बगल के कैबिनों की तलाशी लेने लगे, उन्हें एक दूसरे की खबर धातु फर्श पर चलने से आती टिक-टिक की आवाज से मिल रही थी, कभी-कभी वे गैलरी में अचानक मिल भी जाते, इसी प्रकार मिलने पर दिलीप ने खुशी से चीख कर कहा, 'स्नान घर तो मिला नहीं, हाँ खाना मिल गया।' दोनों उस कैबिन में घुसे जहाँ से दिलीप निकला था। कमरे की दीवार में एक घुमावदार पल्ला एक ओर झूल गया था। पल्ले के पीछे कई खाने बने थे जिनमें विभिन्न रंगों और आकारों के डब्बे रखे थे। सबसे निचला खाना रेफ्रीजरेटिड था। दिलीप बोला, 'यह जब मैं घुसा तो नहीं था, स्पष्ट दीवार थी। ज्योंही मैं अन्दर आया यह पल्ला एक ओर झूल गया और यह सब नज़र आया।'

राजन ने मंझले साइज का एक हरे रंग का डिब्बा उठाया। उसमें भुने हुये चने और गुड़ की डली थी, चने मुंह में डाल चबाता हुआ राजन बोला, 'यार अपनी किस्मत में हर जगह चने खाना ही लिखा है।' दिलीप ने एक मुर्गे की तस्वीर वाला बड़ा लाल रंग का डिब्बा उठाया, 'तू है ही उजबक। अरे फेंक दे यह डिब्बा और कोई दूसरे डिब्बे से कुछ अच्छी चीज खा। मैं तो चिकन तन्दूरी खाऊगा।' लेकिन डिब्बे का ढक्कन उठाते ही वह चकित रह गया! उसमें भी गर्म-गर्म भुने चने और गुड़ की डली थी। गुस्से में उसे फर्श पर फेंक कर उसने एक भद्दी सी गाली दी और दूसरा पीले रंग का पैकेट उठाया जिस पर पुलाव की प्लेट का मोहक रंगीन फोटो था। उसे खोलने पर उसमें भी
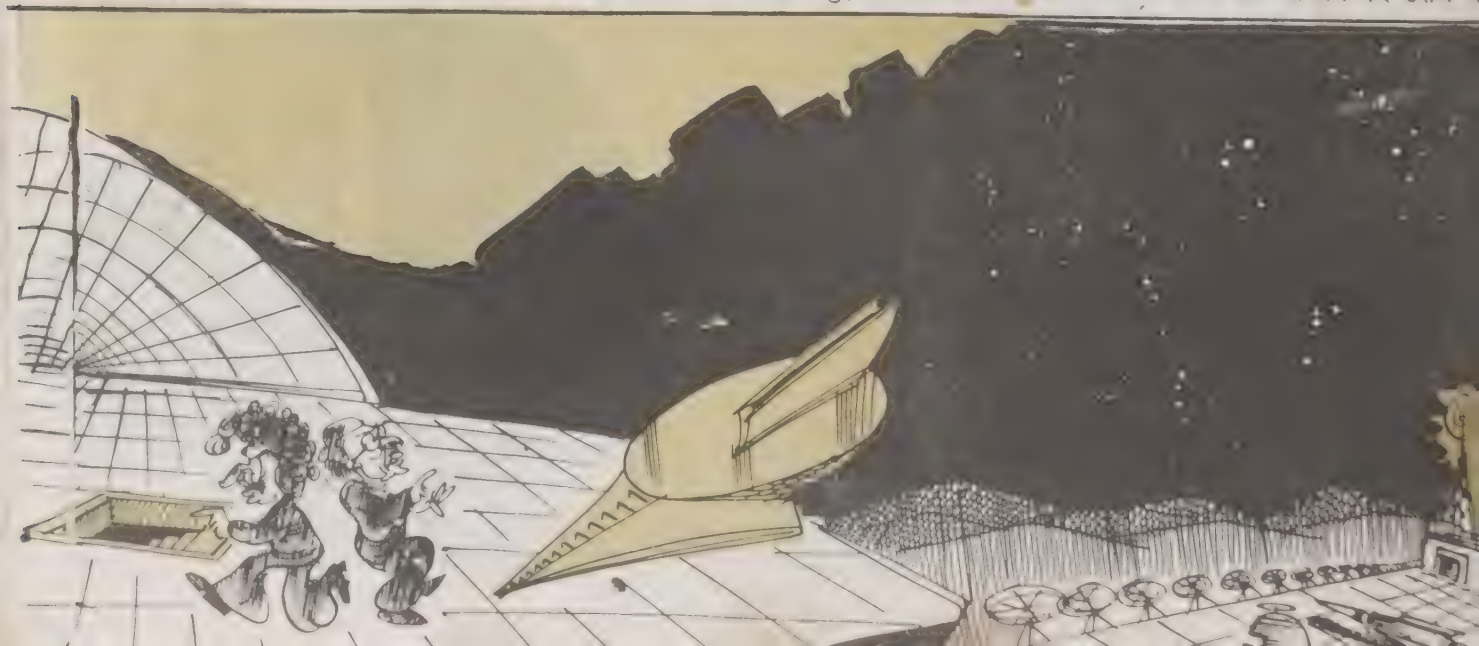
उसे भुने चने और गुड़ की डली मिली, 'यह क्या मज़ाक है ? सब डिब्बों में चना और गुड़ है !' फिर बोतल से राजन को कुछ पीते देख दिलीप ने पूछा, 'क्या है इस बोतल में ? कहाँ मिला तुझे ?' राजन ने बगैर नज़रें मिलाये उत्तर दिया, 'सबसे नीचे वाले रेफ्रिजरेटिड खाने में, खालिस लस्सी है ।'

'बस लस्सी ? और भी कुछ है ?' दिलीप ने निराशा में चीख कर कहा, राजन ने हंसकर चिढ़ाते हुये कहा, 'बस लस्सी की ही सारी बोतलें हैं, बेटा, हमारे साथ रहोगे तो इसी तरह ऐश करोगे ।'

इसके पश्चात दिलीप ने भी चने व गुड़ खाकर लस्सी पी । उनके कैबिन से निकलते न निकलते दीवार सपाट हो चुकी थी । आलमारी का नामो निशान नज़र नहीं आ रहा था । राजन ने पीछे नज़र डालकर कहा, 'सारा काम स्वचालित ।' गैलरी में आते ही उन्हें सामने वाले कैबिन का द्वार खुला नज़र आया । अन्दर टॉयलट नज़र आ रहा था । दोनों ने आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखा । उन्हें लगा जैसे वह एक छोटे-मोटे तिलिस्म में आ फंसे हैं ।

टायलट से फारिग होकर वे शीशे व डायल वाले कक्ष में आकर कुर्सियों पर बैठ ने लगे तो दिलीप ने आश्चर्य से भरी आंखों से राजन को घूरा और बगैर कुछ बोले डायल की ओर इशारा किया । डायल में सब कुछ पूर्ववत था, यहाँ तक कि सुई भी शून्य पर ही टिकी थी ।

दिलीप ने आह भर कर कहा, 'मैं नहाना चाहता था, यहां तो कोई बाथरूम ही नहीं है । न ही पानी है ।' राजन बोला, 'क्यों ? लस्सी की बहुत सारी बोतलें पड़ी हैं, उनसे नहा ले । तेरा रंग भी निखर जायेगा, फिर किसी ब्यूटी कंटेस्ट में भाग लेना लौटने पर ।' दिलीप फीकी सी हंसी हंसा, 'वापिस तो हमारी हड्डियां ही पहुंचेंगी । यह यान पता नहीं हमें कहां ले जा रहा था । अफवाह यह है कि इस यान से सारे ब्रह्माण्ड की यात्रा की जा सकती है । हो सकता है हमें निकट के दूसरे तारा मंडल ले जाया जा रहा हो और अंतर तारा मंडल यात्रा में मनुष्य की मृत्यु निश्चित है । उसी कारण तो पड़ौसी देश के यंत्र मानव का दिमाग भस्म हो गया ।'

इस बार राजन गम्भीर हो गया, 'दिलीप, इसीलिये तो मैं मज़ाक करता हूं कि हमारा टायम कटे । यहां हमारे करने के लिये और क्या है ? खाली कैबिनों में या गैलरी में कब तक कोई घूमता रहेगा? तुमने उन अंतरिक्ष यात्रियों की कहानियां सुनी हैं जो अंतरिक्ष यानों में अंतरिक्ष में भटक गये ? वे भूख से नहीं मरे बल्कि बैठे-बैठे बोर होकर पागल हो गये । जब से हम इस यान पर आये हैं मुझे कुछ-कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है । जैसे कोई भारी विपत्ति आने से पहले कुछ-कुछ होता है ।'

कक्ष में कुछ पलों तक सन्नाटा छाया रहा । फिर दिलीप की क्षीण सी आवाज आयी, 'मुझे भी ऐसा ही लगता रहा है ।'

अचानक राजन पूर्ण तरह दिलीप पर झुक गया और उत्तेजित सा बोला, 'दिलीप, पिछले कुछ क्षणों से मुझे अजीब सी अनुभूति हो रही है । कुछ दबाव सा चारों ओर से शरीर पर बढ़ता लग रहा है । मुझे यान की दीवारें, वातावरण और स्वयं अपना शरीर कांपता हुआ महसूस हो रहा है ।'

दिलीप उत्तर में फुसफुसाया, 'हाँ, ऐसा लग रहा है जैसे वायु शहद की तरह गाढ़ी हो गयी हो, सांस लेने में कठिनाई हो रही है । ज़रा गौर से सुनो राजन, ज़रा एक मिनट चुप रहो । यह चीज सुनाई नहीं पड़ रही लेकिन केवल आभास-सा हो रहा है । वातावरण थर्रा रहा है । यान थर्रा रहा है—कहीं कोई चीज यान में थर्रा रही है जो कि पूरे यान को कंपा रही है ।'

राजन का चेहरा पीला पड़ गया, 'दिलीप, यह सब क्या है ।' दिलीप गम्भीर हो गया, 'लगता है यान तैयार हो रहा है ।'

'तैयार ?' राजन आश्चर्यचकित था, 'किस चीज के लिये तैयार ?'

दिलीप बोला, 'यह थर्राहट शायद यान के इंजनों में हो रही है । यान अन्तर तारा-मण्डल में कुलांचें भरने के लिये तैयार हो रहा है । उसके लिये विशाल इंजन अपूर्व शक्ति एकत्रित करने में प्रयत्नशील है । वह चीज जिससे हम भयभीत हैं वह घटने ही वाली है ।'

'यहां हम पाठकों को ज़रा ब्रह्मांड की विशालता का एक परिचय देना उचित समझते हैं । हमारा सूर्य एक तारा है, पृथ्वी, शुक्र, मंगल वगैरह इसके ग्रह हैं । हमारे आसपास इस प्रकार के एक करोड़ के आसपास तारे हैं इन सारे तारों का एक ही समूह है जिसे तारा मंडल कहा जाता है । यदि हम ऐसा यान बनायें जो प्रकाश की गति (तीन लाख किलोमीटर प्रति सैकंड) से चले तो धरती से चलने के बाद लगभग सवा चार वर्ष बाद एक तारा आयेगा । आगे हर चार-पांच वर्ष बाद एक-एक तारा मिलता रहेगा । इसी प्रकार अपने तारामंडल को पार करने में उस यान को ८०,००० वर्ष लगेंगे । आगे दो करोड़ वर्ष तक शून्य के सिवा कुछ नहीं मिलेगा । उसके बाद दूसरा तारामण्डल शुरू होगा जिसमें लाखों-करोडों हमारे सूर्य जैसे तारे होंगे । फिर आगे करोड़ों वर्ष शून्य फिर तीसरा तारा मंडल आरम्भ होगा। इसी प्रकार करोड़ों वर्षों के अंतरालों पर लगभग एक करोड़ तारा समूह है जिनका हमें आज पता है । हमारी कथा के वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि एक तारा मंडल से दूसरे तारा मंडल में जाने के लिये आवश्यक है कि ऐसा यान

बने जो तारामंडलों के बीच की करोड़ों प्रकाश वर्ष की दूरी को प्रकाश की गति से भी लाखों गुणा अधिक गति की भयानक गति से एक विशाल कुलांचे यानि छलांग में पार कर सके। हमारी वर्तमान कहानी का यान फार्मूले के अनुसार यही छलांग मारने में समर्थ होना चाहिये परन्तु वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि ऐसी भयानक छलाँग में मनुष्य जीवित नहीं बचेगा।

राजन ने दीवार पर हाथ रखा, 'दिलीप, लेकिन दीवार में तो कुछ महसूस नहीं होता।' दिलीप ने उत्तर दिया, 'राजन, यह चीज इस प्रकार अनुभव करने वाली नहीं है। यह यान अज्ञात सिद्धान्त पर बना है। पता नहीं इसके इंजन किस प्रकार के हैं।' पांच मिनट की प्रतीक्षा के बाद वह चीज़ एक झटके के साथ घटित हुयी। दिलीप और राजन को लगा जैसे किसी ने छाती में छुरा घौंप दिया है। राजन अकड़ सा गया। उसने उठने की चेष्टा करते-करते एक नज़र दिलीप पर डाली··· फिर आंखों के आगे सफेद बर्फ की चद्दर सी तैर गयी। कानों में दिलीप के बच्चे की तरह सिसकने की आवाज आयी। कुछ वस्तु उसे शरीर में तड़फती सी लगी, बाहर बर्फ की पर्तों पर पर्तें जम रही थीं उन पर्तों के नीचे आत्मा पिंजरे में कैद पंछी की तरह फड़फड़ाने लगी।

कुछ चीज टूट गयी भीतर से और प्रकाश के भंवर में चक्कर लगाने लगी। भंवर का केन्द्र एक टीस भरी पीड़ा का गहरा सा छेद था। भंवर की तीव्रता बढ़ती गयी... 'और धीरे-धीरे भंवर उस छेद में समाता रहा...अंत में भंवर की समाप्ति के साथ ही
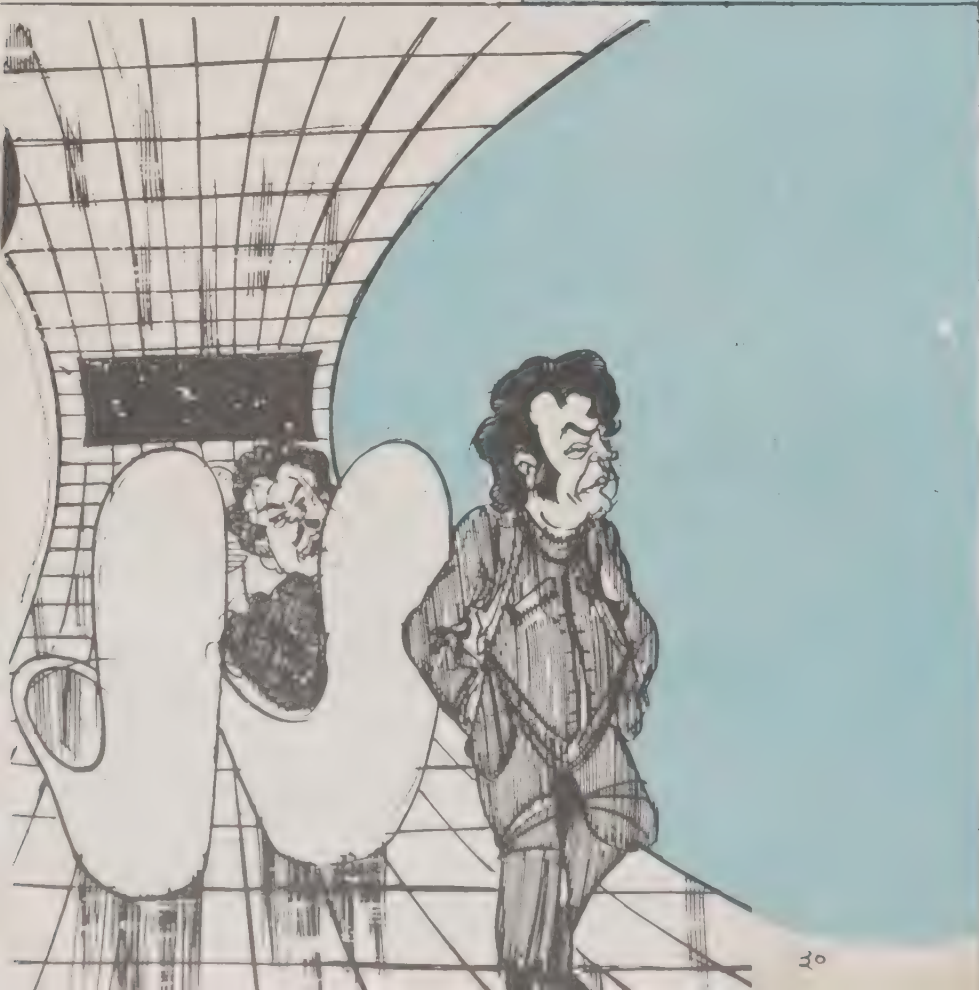
चारों ओर गहरी नीरवता व अंधेरा छा गया।

शायद यही मृत्यु थी!

यह एक पूर्णतया शांत व भावना शून्य दुनिया थी। हल्के अंधेरे में लिपटी दुनिया—एक अनुभूति हीन अनुभूति—एक आकारहीन संघर्ष......जिसमें एक हल्के सफेद रंग की लकीर के रूप में आत्मा भय के बर्फीले समुन्द्र में थपेड़े खा रही थी।

फिर अचानक विचित्र आवाजें चारों ओर से बर्फ की परतों को चीरती हुई आने लगीं···'आपको कफन का कपड़ा पसन्द आया? सिलक स्टोर से आया है,···इनमें विटामिन ए और डी मिला है···आपके श्राद्ध में पंडित को एक लंगड़ी बकरी दे दें तो कैसा रहेगा।···राजन, तुम एक लम्बे सफर पर जा रहे हो। दो-तीन तौलिये सूटकेस में रखना··· नर्क में तौलिये महंगे मिलते हैं।' कुछ देर बाद आवाजें आनी बन्द हो गयीं।

राजन को अपनी आत्मा पतली रेखा के रूप में भय से काँपती नज़र आयी एकाएक उस पतली कांपती रेखा को चारों ओर से सैंकड़ों गलों से फूटकर आती समूहगान की तरंगों ने भींच दिया।

'वह देखो एक मक्कार मानव जा रहा है।
मरकर हमको ख़ुशी दिये जा रहा है।'

समूहगान की तरंगें समुद्री तूफान की लहरों की तरह ऊंची और ऊंची, उससे भी ऊंची होकर आ रही थीं। एकाएक वह रेखा लहरों में खो गयी। अनन्त काल बाद ऐसा लगा जैसे लहरों ने उस रेखा को रेगिस्तान में लाकर पटक दिया हो, चारों ओर से बहुत कर्कश आवाजें आ रही थी, 'इस आत्मा का क्या करना है?'

'पापी आत्मा है।'

'तो इसे उबलते तेल की कढ़ाई में फेंक दें या लाल तवे पर बिठा कर···?'

'इधर आइये लाइन में खड़े हो जाओ लाइन में।'

'नर्क का विदेश विभाग आपका स्वागत करता है।

'ओ गधे, लाइन से बाहर क्यों खड़ा है?'

इस आवाज पर राजन की लकीर रूपी आत्मा लड़खड़ायी, पीछे हटी···एक भयंकर शक्ल का यमदूत उसकी ओर बढ़ा, कैंची से उस लकीर को काट कर टुकड़े-टुकड़े करने लगा···फिर एकाएक चारों ओर अंधकार छा गया।

-क्रमशः

मिडि-मैक्सी के चक्कर से वचने का उपाय है एक ओर मिडी रखें दूसरी ओर मैक्सी. जौन सा फैशन चल रहा हो उसे सड़क की ओर कर चलना शुरू करें। कभी-कभी ऐसा होगा जैसे जाना आपको पूरव की ओर हो तो फैशन के मारे पश्चिम को जाना पड़ेगा।

वालों के विषय में मध्य मार्ग यही रहेगा कि एक ओर लम्वे वाल रखें दूसरी ओर छोटे, छोटे वालों की तरफ से वुजुर्गों से मुखातिव हों और वाजार में लम्वी तरफ से।

आजकल फैशन एक समस्या बन गयी है। आज मिडी है तो कल मैक्सी ! मैक्सी चालू हो गया तो एक साल पहले बनवाई मिडीयां सब बेकार हो गयीं। चौड़ी पैंटों का रिवाज चला तो तंग वाली बेकार हो गयीं। पश्चिमी देशों के लिये तो यह ठीक है पर भारत जैसे गरीब देश वासियों के लिये यह बड़ी भारी मार है। हमारी सलाह मान कर इस फैशन की मार से बचा जा सकता है।

जूते

यही फार्मूला ऊंची एड़ी और नीची एड़ी के जूतों पर लागू किया जा सकता है। एक पैर में ऊंची एड़ी दूसरी में नीची। हां, जरा लंगड़ा कर चलना पड़ेगा।

पैंट

ऐसी पैंट सिलवायें जिसकी एक टांग चौड़ी हो और दूसरी पतली। जो फैशन चालू हो वह वाली टांग आगे रख कर खड़े हों।

फैण्टम
और कुला-कु
की जादूगरनी

हीरो... यहां से चले जाओ।
अब मुझे समझ आ गयी
यह मांस...ही शिकार फंसाने का चारा है...जब डेविल ने इसे चबाना शुरू किया तो इसमें से धुंआ निकलने लगा...ऊहं...

एक क्रूर रानी जिसे कि कुला-कु की जादूगरनी कहा जाता है, धुंए से सबको अपना बन्दी बना लेती है।

सदा धीमी रोशनी वाली कुला-कु की रहस्यमय घाटी में।
उन पक्षियों को जरा ध्यान से उठाओ। वह कुछ पक्षी जिन्दा भी चाहेगी।

चलो, आगे। बढ़ो।

"वह" कौन है ?

कुला-कु की घाटी में...
हाँ, और वह उनके चिड़ियाघर में चले जायेंगे...या उनमें भूसा भर दिया जाएगा।
आज का शिकार पसन्द आएगा। इसमें पसन्द आने की क्या बात है ? इन्हें खा तो सकते नहीं।
शेर ! उसने शेर लाने को मना किया था क्योंकि हमारे पास शेर काफी हैं इस बार शेर नहीं ले कर जाते
ठीक है।

चलो, आगे

'वह' कौन है ?
?

?

हमारे जाल ने यहां क्या फँसाया है ?

अरे, यह तो विरल चीज है ! भेड़िया इस घाटी में पहले कभी नहीं देखा ! और यह

आदमी ! इतनी बड़ी देह वाला ! नकाब पहने हुए ! वह इसका क्या करेगी ?

बन्दूक ⋯ यह आदमी आया कहाँ से ?

कुला-कु की धीमी रोशनी वाली रहस्यमय घाटी में ।

ज़रा इसे ध्यान से ले जाओ । बहुत अजीब शिकार फँसा है ।

और उसे ध्यान से ले जाओ ।

अरे, वह देखो ।

CONTE

"एक बड़े ही काम की बात बतलाता जिसे मैं खुद अमल में लाता हूं । सुनेंगे ?"

"हां, हां—कहिये ।"

"जब दरवाजे की घंटी बजती है, तो मैं रन हैट-कोट पहिन कर हाथ में छड़ी ले ा हूं और जब देखता हूं कि आने वाले जन से नहीं मिलना है, तो मैं झट से कह ा हूं कि मैं बाजार जा रहा हूं ।"

"और, जब आपको किसी आये हुए जन से मिलना हो तो ?"

"तब वैसी हालत में, मैं यह कह देता हूं मैं अभी-अभी बाहर से लौटा हूं ।'

●

दुकानदार ने अपने ग्राहक से पूछा : हिये, आप क्या चाहते हैं ?"

ग्राहक बोला : "चाहता तो हूँ कि किसी भनेत्री से विवाह कर लूं और मौज करूँ, खैर इस समय तो मुझे एक पैसे का ाकू ही दे दो ।"

●

अफसर : 'मुझे अफसोस है, मेरे यहां हारे लिये कोई जगह नहीं है । मेरे पास इतने आदमी काम की तलाश में आते हैं मैं उनका नाम तक याद नहीं रख सकता ।"

आवेदक : "श्रीमान् जी, तब आप मुझे इतने सारे नामों का रिकॉर्ड रखने का काम देने की कृपा करें ।"

●

'मैं जो कुछ बनाता हूं वह धुएँ में उड़कर खत्म हो जाता है ।'

'ऐसा क्यों, मैं तो समझता था कि तुम सफल कारोबारी हो ।'

'वास्तव में हूं तो मैं सफल कारोबारी ही—मैं आतिशबाजी बनाता हूं ।'

●

एक दार्शनिक का कहना है कि दस लड़कियों का बाप किसी लखपति व्यक्ति से अधिक सुखी है, क्योंकि वह और अधिक की कामना नहीं करता ।

गर्म-मिजाज अफसर के चार हफ्ते की छुट्टी से लौटते ही क्लर्क ने छुट्टी की अर्जी पेश कर दी—'साहब, अब तो मुझे एक महीने की छुट्टी मिल जाये ।'

'चार हफ्ते से दफ्तर नहीं आया' अफसर गुर्राया । "क्या तुम्हारे लिए उतनी छुट्टी काफी नहीं है ?"

●

"मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि दौलतराम जी पर मेरे सौ रुपये चाहिएं ।"

"तो आप ऐसा कीजिए कि आप दो सौ रुपयों का तकाजा करते हुए एक पत्र आज ही डाल दीजिए । वह उत्तर में अवश्य यही लिखेंगे कि उन्हें तो केवल सौ रुपये देने हैं । और फिर वह पत्र-आपके लिए पक्का सबूत हो जायगा ।"

●

एक प्रार्थी के आवेदन-पत्र पर विचार करते हुए संस्था के प्रबंधक ने कहा, "बिल्कुल अनुभव न होते हुए भी आप सबसे अधिक वेतन माँग रहे हैं ।"

प्रार्थी चट बोला, "आप ही सोचिए, जिस काम का मुझे कोई अनुभव नहीं, उसे करने में कितना अधिक परिश्रम करना पड़ेगा ।"

●
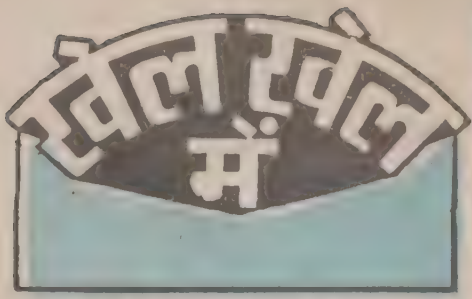
सिंघई सतीन्द्र कुमार जैन—दमोह

प्र० : ओलम्पिक खेलों में कौन-कौन से खेलों का समावेश नहीं होता ?

उ० : गल्फ, क्रिकेट, टैनिस, चैप, पोलो, स्कवाश, भारतीय फ्री स्टाइल कुश्ती, आइस हॉकी, स्कीइंग, स्केटिंग, ताश के खेल, घुड़-दौड़, बेस बाल, रगबी तथा कबड्डी।

बद्री प्रसाद 'अंजान'—गोला बाजार

प्र० : फुटबाल का खेल कहाँ से शुरू हुआ ?

उ० : इंग्लैंड से।

प्र० : क्रिकेट मैच आजकल कहाँ हो रहा है ?

उ० : भारत में।

भारत सिंह राठौड़—झालावाड़

प्र० : भारत में क्रिकेट का सबसे बड़ा पदक कौन-सा है ?

उ० : रणजी ट्राफी।

सुशील कुमार जैन—मोहाना (सोनीपत)

प्र० : रणजी मैचों में किस खिलाड़ी ने अब तक सबसे अधिक रन बनाये हैं ?

उ० : वर्तमान खिलाड़ियों में सेंट्रल जोन के श्री हनुमंतसिंह ने कुल ५७६३ रन शतक व अर्ध शतक क्रमशः १५ व ३२।

जदेल कुमार मिश्रा—धनबाद (बिहार)

प्र० : मेरी उम्र २० वर्ष है। एकादस वर्ग में पढ़ता हूं। क्या मैं फुटबाल, हाकी, बाली बाल आदि खेल खेल सकता हूं या नहीं ?

उ० : क्यों नहीं।

संजीव सैनी—जयपुर

प्र० : भारत के क्रिकेट टैस्ट खिलाड़ी 'ब्रजेश पटेल' का रणजी ट्राफी रेकार्ड क्या है ?

उ० : पिछले सीजन के अन्त तक :— ३८ मैच, ५८ इनिंग्स, २११३ रन, पांच शतक, १४ अर्द्ध शतक, इसके अतिरिक्त वे २८ रन पर एक विकेट ले चुके हैं।

एस० मन्ज़र [illegible] 'कादरी'—बीकानेर

प्र० : क्या कैरम बोर्ड को भी सरकार अन्य खेलों में शामिल कर लेगी ?

उ० : इस दिशा में अभी तक कोई साक्रय कार्यवाही नजर नहीं आ रही।

मोहन लाल—सामाना मंडी

प्र० : भारत में क्रिकेट मैच किस मास में हो रहा है ?

उ० : नवम्बर-दिसम्बर, १९७६, जनवरी १९७७।

सुरेश कुमार विजय कुमार आहुजा—खुर्जा

प्र० : क्या क्रिकेट में भी फाउल होता है? यदि हां तो कितने फाउल के बाद खिलाड़ी को बाहर कर दिया जाता है ? फाउल होने पर विपक्ष दल को क्या लाभ होता है ?

उ० : क्रिकेट में फाउल करके खिलाड़ी को आउट नहीं किया जाता। केवल यदि बॉलर लगातार फाउल करे एम्पायर की नजरों में, तो वह उसे बाउलिंग से हटा सकता है फील्ड से बाहर नहीं जाता।

कुँवर उमेश—बिहार

प्र० : सन १९८० ई० में होने वाला विश्व ओलम्पिक किस नगर में होगा ?

उ० : मास्को में।

मनोज कुमार—वाराणसी

प्र० : सन १९८० में होने वाला ओलम्पिक कहाँ होगा।

उ० : मास्को में।

श्री चन्द प्रकाश एस० परयानी—महाराष्ट्र

प्र० : फुटबाल प्रतियोगिताओं के मुख्य नाम कौन-कौन से हैं ?

उ० : विश्व कप फुटबाल, जूल्ज रि[illegible] ट्राफी, इंग्लैंड की आई. एफ. ए., यूरोपि[illegible] चैम्पियनशिप, मडका फुटबाल, अपने भा[illegible] की डूरंड, डी. सी. एम. ट्राफ़ी, कलकत्ता [illegible] आई. एफ. ए. शील्ड, लीग चैम्पियन शि[illegible] नेशनलज, रोवर्स कप आदि।

जवाहर शैलेन्द्र भाटिया, राजस्थान

प्र० : अब तक टेस्ट जीवन में क्रमशः ग[illegible]स्कर, विश्वनाथ तथा पटौदी ने कित[illegible] सेंचुरी लगाई है तथा अब तक बेदी त[illegible] चन्द्रशेखर ने टेस्ट जीवन में कुल कितने [illegible] बनाये हैं ?

उ० : कृपया दीवाना का पिछला अंक देखि[illegible] (खेल-कूद अंक)।

हेमन्त कुमार वार्ष्णेय, अलीगढ़

प्र० : क्रिकेट के खेल में 'एल. पी. डब्ल्यू[illegible] आउट होते हैं। इस एल. पी. डब्ल्यू. [illegible] क्या अर्थ है ?

उ० : एल. पी. डब्ल्यू. नहीं होता, यह ए[illegible] बी. डब्ल्यू. है। एल.बी. डब्ल्यू. का खुलासा 'लैग बिफोर विकेट' (leg before wecekt).

सकीरअली सिद्धिकी—बरेली

प्र० : भारत तथा वैस्टइडीज के बी[illegible] पहला टैस्ट मैच कब हुआ था और को[illegible] जीता था और वह टेस्ट मैच कहाँ हुआ था[illegible]

उ० : भारत वैस्ट इंडीज का पहल[illegible] टैस्ट भारत में ही बम्बई में हुआ था, १९४८-४९ शृंखला में, इसमें एक टैस्ट वैस्ट इंडी[illegible] जीता बाकी चार ड्रा रहे।

माथापच्ची 'जंजीर पहेली'

१. ऊपर तीन-तीन कड़ियों की पांच लड़ियाँ लटक रही हैं। एक कड़ी को तोड़ने में एक पैसा लगे और जोड़ने में दो पैसे तो बताइये पांचों लड़ियों की एक ही जंजीर बनाने में कितने पैसे कम से कम खर्च होंगे ?

२. चित्र में चार आयत दिखाये गये हैं, इनमें से केवल एक आयत को हटा कर वर्ग बनाइये।

उत्तर पृष्ठ ४० पर

एक माह चोर की कहानी जो जहां भी माह की दाल पकती देखता पतीला चुरा ले जाता था।

पात्र—रहा जेश गन्ना, पीटू सिंह, प्रेम छोकरा, अनबन हुसैन, कामिनी को शाल, अरुणा ही रानी

नरहे अन्दर बेदी का

माह चोर

गीत-संगीत की दुर्गति—बर्मन बख्शी

दाल होवे माहे वन्दा होर की चाहे ?

आलू वाले पराठे ?

प्रेमदावो

माह दि दाल (दाल माह)

मेरा नाम यारो माह चोर, काम चुराना' माह की दाल, मूंगी की धोवीं दाल, मल्का-मसूर वगैरह सब वेकार माल, जहा देखू पकती माह की दाल, 'दिखाऊ वहीं हाथ का कमाल, चम्पत हो जाऊ लेकर पतीला, वैठू वहा जहा कंगालों को हो रहा हो आटा गीला।

मै हू प्रेम ढावे वाला, खाने मे डालू खूव मसाला, जीभ पर पड जाये छाला।

यह माह चोर वड़े काम का आदमी है। मैं खुद राजमाह की मारी हूं। जम्मू की राजमाह की दाल मुझे वहुत अच्छी लगती है। मेरा वाप एक कंगला था। मरते हुए खोटे सिक्के छोड़ गया। चलते ही नही। उन खोटे सिक्कों के लिये वड़े-वड़े लोग मुझसे शादी करने के इच्छुक है।

मेरे साथ शादी कर ले राजमाह की मारी, मैं रोज तुझे ग्राहक प्लेटों मे जो राजमाह की झूठन छोड जाते है खिलाऊगा। अपने होट के आगे से कुत्तों को भगाऊगा।

प्रेम ढावा

माह चोर, तुम भी मेरे साथ शामिल हो जाओ। पड़ोस के ढाबों से तुम माह की दाल के पतीले उड़ाना यहां मैं बेचूंगा
नहीं प्रेम ढाबे वाले, मुझे तो हराम की रोटी ही फलती है कोई ऐसा काम हो करना पड़े।
तुम्हें पता है कि उसका बेटा बचपन में खोया था ?
डन, मैं एक ऐसी जगह हा एक औरत रहती है, उससे कहना कि मैं बचपन का तुम्हारा खोया बेटा हूँ।
नहीं, यह तो सीधी सी बात है। फिल्मों में कोई भी औरत बगैर बच्चे के दिखाई दे तो समझ लो कि उसका बच्चा बचपन में खो गया कोई फिल निर्माता इस अटूट नियम को नहीं तोडता यह औरत इसलामाबाद पाकिस्तान में रहती है। मैं एड्रैस देता हूं वहां चले जाना।
हां, तुम ही मेरे बेटे हो बिल्कुल वही निशान !
तुम मेरे बेटे ही हो ! वह भी बचपन में कलेजी के पतीले चुराया करता था।
तुमने पहचाना नहीं ? मैं पाकिस्तान का प्रेजीडेंट जुल्फ अलीकार भुट्टो हूं। तुमने यह जो वर्दी पहन रखी है वह पाकिस्तान पीपुलस पार्टी की वर्दी है। इसका डिजाइन मैंने स्वयं तैयार किया था। जब मेरी रचना यह गल-पट्टी वाला कोट तुम पहने हो तो इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि तुम ही मेरे बचपन के बिछुड़े हुए बेटे हो. अब तुम यहीं रहोगे।
तुम चिन्ता न करो। पिशौरी लोग माह की दाल बहुत खाते हैं।
आपको हो गया है. मैं आपका बेटा नहीं हूँ। मैं तो माह की दाल के पतीले चुराया करता हूं।
आप खुद कौन हैं ?
लेकिन मुझे तो माह की दाल के पतीले चुराने की आदत है। यहां माह की दाल बनती है ?
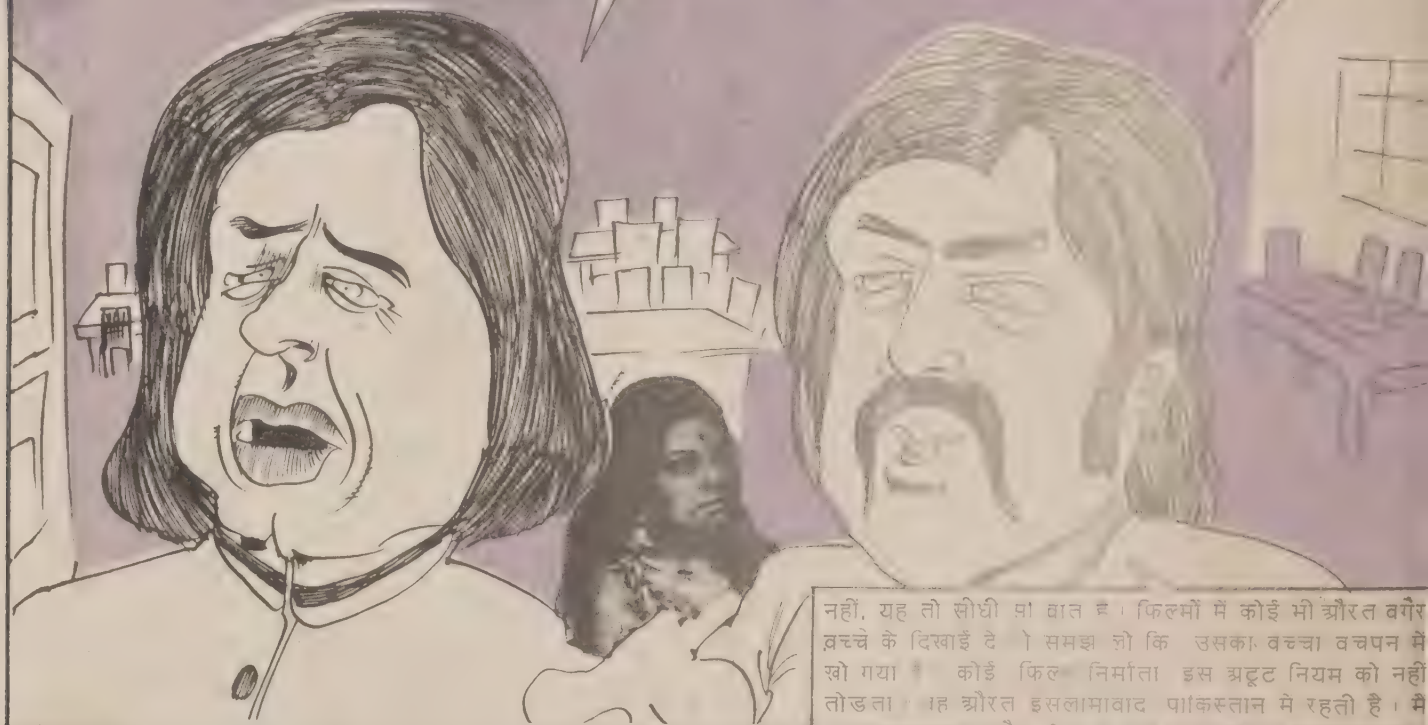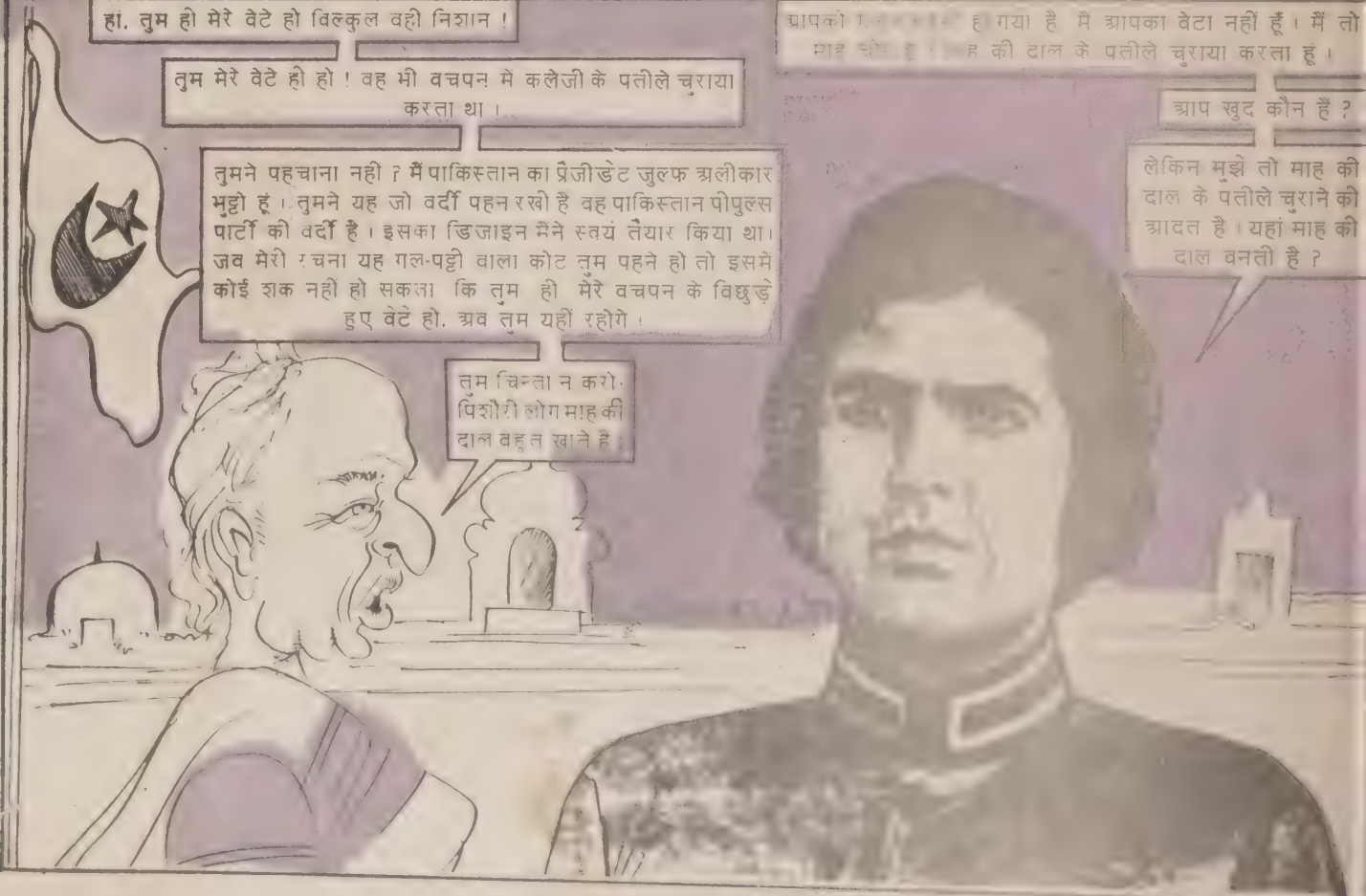
ने मुझे वचा कर जो एहसान किया है वह मैं नहीं भूल सकती। न आते तो प्रेम ढावे वाला मुझे मार ही जाता। वह मुझे जमाह की दाल के धोखे में अरहर की दाल खिलाना चाहता था।
ओ तू फिकर न कर सन्तो, मैं माह और राजमाह की मिली-जुली दाल लाकर तुझे खिलाऊंगा।
यहां इस जंगल में तुम माह—राजमाह की दाल कहां से लाओगे? और मुझे वगैर दाल खाये नींद नहीं आती।
मेम साहव, मै शहर पहुंचने पर खिलाऊंगा। लोग वगैर खाना खाये पानी पीकर सो जाते हैं। तुम्हें कैसे नींद नहीं आयेगी? यहां तो हरा-भरा जंगल है। चिड़ियां चहक रही हैं यही चिड़िया तो है जो मुहम्मद रफी के लिये मूंग की दाल पकाती थी और कौआ रोटी लेकर आता था।
लगता है यहां मेरी राजमाह की दाल नहीं गलेगी। खैर उन दिनों को याद कर लेती हूं जव वैष्णो देवी जाते हुए मैंने जम्मू मे फ्रन्टियर ढावे में चावल और राजमाह की दाल खाई थी।
क्या तुम मुझे पहचानते भी नही?
मैं नही जानता तुम कौन हो? मैंने तुम्हे कभी देखा भी नही है पहले
याद नही है? मैंने ही तो तुम्हें जुल्फ अलीकार भुट्टो का वेटा वना कर यहां भेजा था।
मैं तुम्हारे सव षड्यंत्र जान गया हूं। तुमने मुझे भुट्टो का वेटा वना कर इसलिए भेजा ताकि मैं भुट्टो से अपनी वर्थ डे पर पूरा जम्मू कश्मीर मांग लूं और फिर तुम मुझसे जम्मू ले सको ताकि भारत के सवसे वढिया राजमाह की दाल पैदा करने वाले इलाके तुम्हारे कब्जे में आ सकें और तुम राजमाह का लालच देकर नीतू से शादी कर सको। मैं तुम्हारे सारे मंसूबों को नाकामयाव करके रहूँगा।
ाज! मैं तुम्हें इसका मजा ऊंगा, किसी दिन माह की मे मैंढक पका कर खिलाऊंगा।
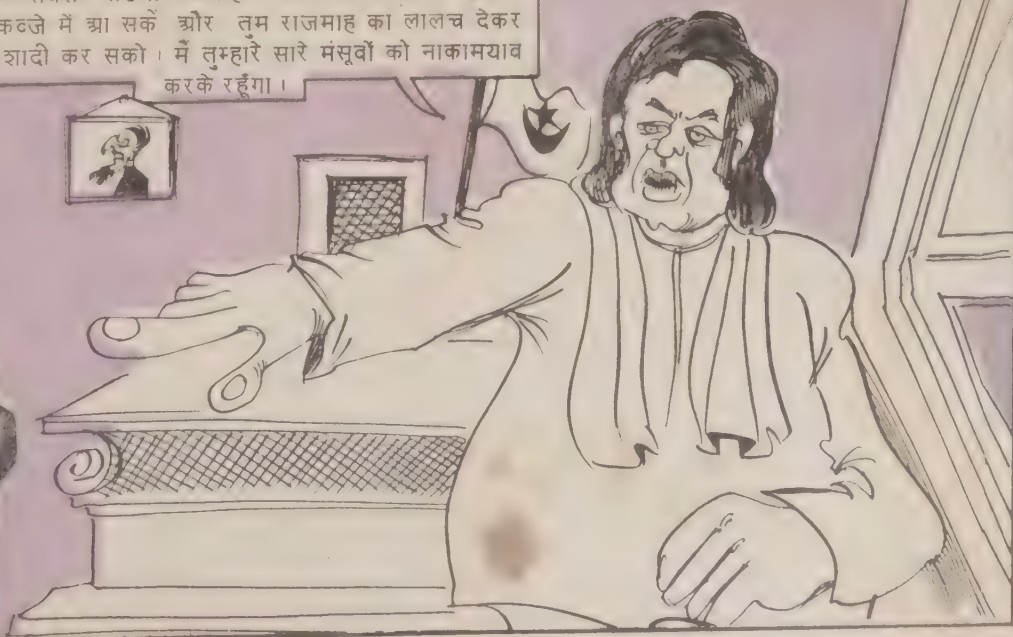
उधर भुट्टो अमरीका और ब्रिटेन के दौरे से जब वापिस आते हैं।

हैं ! मैं यह क्या देख रहा हूँ ? यह मेरा वेटा नहीं है। इसने अब पीपुल्स पार्टी की वर्दी वाला कोट पहनना छोड़ कर मेरे विरोधी खान अब्दुल गफ्फार खां के वेटे का रूप धरा है। वही काले चश्मे, वही वालों वाली टोपी और गले मे दुशाला। विल्कुल उसका डवल वना है। मुझे तुझसे यह उम्मीद नहीं थी। तूने एक मां की ममता को गोली मारी है।

निकल जाओ तुम पाकिस्तान से वर्ना पाकिस्तान डिफेंस रूल्ज के अंतर्गत गिरफ्तार करवा दूंगा।

मा, मैंने यह सब जानबूझ कर नही किया। मुझसे जबरदस्ती करवाया गया था, हिन्दुस्तान के प्रेम ढावे वाले ने शरारत की है।

मैं जाकर
ढावे वालों
पतीले उ
करूंगा।

राजमाह को दाल खाने वाली का असली हकदार मैं ही हूं और मैं ही

तेरे ढावे मे सड़ी हुई वासी दाल मिलती है वह यह खायेगी ?

तुम्हें फर्क नहीं पड़ता होगा लेकि
हमें तो फर्क पड़ेगा। हमारे लिये पा
लड़ना वहुत जरूरी है। उतना
जितना ड्राइविंग से पहले लाइसें
लेना।

अब लड़ क्यों रहे हो ? लड़ाई के सीन सैंसर काट लेगा। लड़ने का फायदा क्या है ? सबसे अच्छा यही रहेगा तुम एक खोटा सिक्का टॉस करके देख लो। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। कोई भी जीत जाये मुझे तो सिर्फ खाने के लिये राजमाह की दाल मिलनी चाहिये।

हा, लड़ कर वास्तव में हम विवाहित जीवन की ट्रेंनिंग ही तो ले रहे हैं यह ले घूंसा !

यह ले

THE END
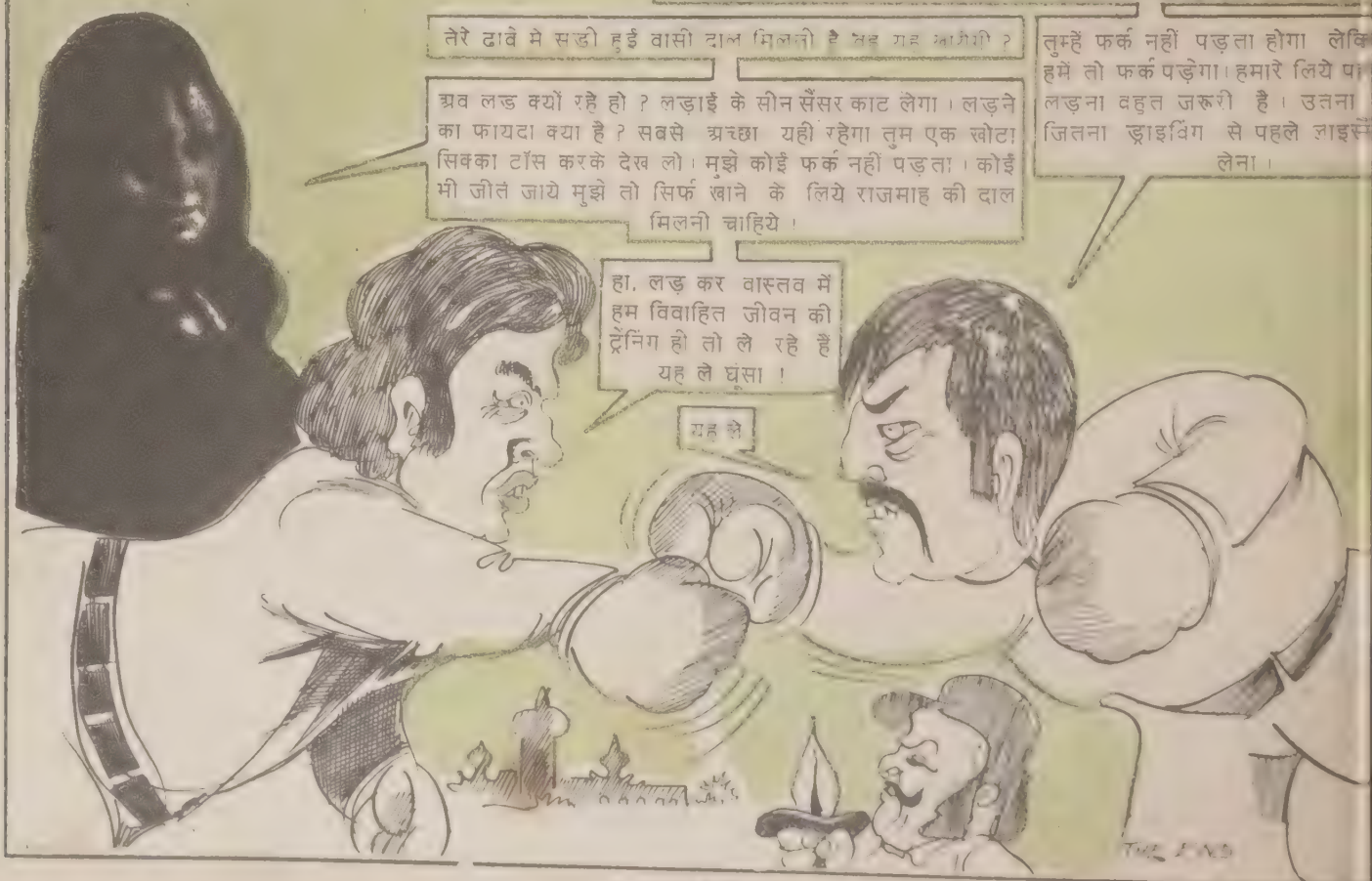
प्रश्वनी कुमार ग्ररोड़ा, ग्ररोड़ा बेकरी काशीपुर, नैनीताल, 18 वर्ष. खाना-पीना, मौज मस्ती, मुफ्त का माल हजम करना व दीवाना पढ़ना।

पवन कुमार, म. नं. 26, स्कूल रोड, जगाधरी, 18 वर्ष, पेंटिंग करना. कार चलाना, राह चलते मुसाफिरों से फिर मिलेंगे कहना व पत्र मित्रता।

महेश सिंह बिष्ट, कैलाशन्यू तल्लीताल, नैनीताल, 18 वर्ष, बांसुरी बजाना, लड़ाई करना, लड़कियों से नफरत करना व दीवाना पढ़ना।

सुनील कुमार सिंघल, 1/ई, गुरु नानक रोड, ग्रादर्श नगर दिल्ली, 21 वर्ष, संगीत, नई-नई बातों की जानकारी, पढ़ना व पत्र मित्रता।

बजरंग लाल कक्कड़, म. नं. VIII/32, गली चावला, फाजिल्का 18 वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पत्रिका पढ़ना व सड़क पर ग्रावारा घूमना।

कमल ग्ररोड़ा, नारंग मैंशन, हनुमान गढ़ टाउन, 19 वर्ष, पत्र मित्रता, फिल्मी फोटो इकट्ठे करना, बैडमिंटन खेलना व खुश रहना।

राजेन्द्र कुमार बांठिया, 13. जमादार गली नं. 3, (पटनी बाजार के पास) उज्जैन, (म. प्र.), 15 वर्ष, खेलना, पत्र-मित्रता करना।

सन्तोष कुमार भोजगडिया द्वारा राधेश्याम भोजगडिया, ग्रामला पाड़ा (बड़ी मस्जिद की बगल में) झरिया, धनबाद, 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना ग्रादि।

दीपक गुप्ता, 232 शाक पुरी, कंकड़खेड़ा, मेरठ, 15 वर्ष, दीवाना के हास्य कार्टूनों को पढ़ना व फिल्मी ग्रभिनेताग्रों को पत्र लिखना।

दिनेश चन्द भारद्वाज, वजीरपुर 185 ग्रशोक विहार, दिल्ली, 22 वर्ष, बम्बई की सैर करना, कला एवं कलाकारों से प्रेम करना, दीवाना पढ़ना।

राकेश कुमार चड्ढा, रामपुरा मौहल्ला, म. नं. 411 नजदीक कुंग्रा पीर नाथ, हिसार, 20 वर्ष, पत्र मित्रता, विदेश जाना व दांव सिखाना।
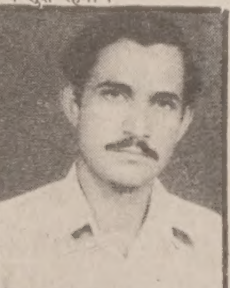
सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्रेश' इतवारी, (लाड़पुरा) नागपुर, 28 वर्ष, साहित्य की पूजा करना, प्रगति की राह ग्रपनाना, गम से दूर रहना।

नरेन्द्र सिंह थापा, नेहरू ग्राम, देहरादून, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना. फिल्म देखना, गाने गाना और हेमा मालिनी से शादी की हां करवाना।

राजीव कुग्रा, 65/1, चन्द्रनगर, ग्रालमबाग, लखनऊ, 14 वर्ष, दीवाना पढ़ना. पहेलियां भरना, स्कूल में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण होना व कहानियां लिखना।

बद्री प्रसाद वर्मा 'ग्रन्जान', ग्रध्यक्ष शोभा रेडियो श्रोता संघ गल्ला मंडी, गोला बाजार, गोरखपुर, 22 वर्ष, कहानी, कविता लिखना ग्रादि।

कृष्णकुमार चन्देल 'बोई' सुधाकर (बी. ए.), 43-साउथ मार्कीट किदवई नगर, नई दिल्ली, 20 वर्ष, ड्रामे, गाने ग्रादि सीखना।

सुरेन्द्र कुमार छावड़ा, 42/55, B, बिल्लोचपुरा, ग्रागरा-2 15 वर्ष, टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना, फिल्में देखना व मजाक करना।

मुकेश प्रसाद, श्री रामेश्वर प्रसाद, पावर हाउस, गाजीपुर, 16 वर्ष, सिनेमा देखना, दीवाना पढ़ना ग्रौर साइकिल चलाना ग्रादि।
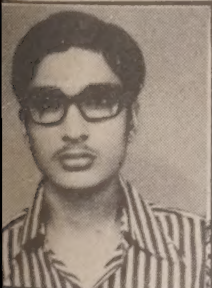
गोविन्द ग्रजमेरी, कर्नूल, ग्रान्ध्र प्रदेश, 13 वर्ष, ग्रक्षरों की तबदीली करना, चिल्ली साहब के शागिर्द बनना व दीवाना पढ़ना।

प्रदीप कुमार जैन, 52 गुसाईं पुरा डा. वर्मा के सामने (झांसी) 14 वर्ष, घूमना, कहानी लिखना, फोटो खींचना ग्रौर दीवाना पढ़ना।

उमा शंकर प्रसाद, सूरज जर्दा फैक्ट्री, गया (बिहार), 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना, डाक टिकट संग्रह करना, पत्र मित्रता करना ग्रादि।
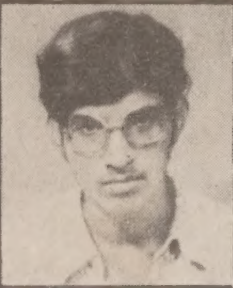
प्रवेश चन्द्र मल्होत्रा, ई-29, ए विजय नगर सिंगल स्टोरी, दिल्ली, 18 वर्ष, नावल पढ़ना व जासूसों के साथ रह कर जासूसी करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में ग्रपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर ग्रपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे ग्रपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

____

पता ____________________

____

ग्राय ________ शौक ____________

____

बालोपयोगी पुस्तक

	रु० पै०
कमल और केतकी	१.५०
काकेशास का कैदी	३.२०
ऐसे थे नेहरू जी (ले० माई दयाल जैन)	२.५०
एक देश एक हृदय (ले० विष्णु प्रभाकर)	५.००
किस्सा चार दरवेश	१.५०
हमारे पक्षी (ले० राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंहा)	४.५०
हमारा स्वतन्त्रता का आन्दोलन चित्रों में (ले० एस. डी. सावंत)	३.५०
चाचा नेहरू जी की कहानी (चत्रों में) (ले० एस. डी. सावंत, एस. डी. बादलकर)	३.५०
चिड़ियों का दरबार	३.००
जातक कथाएं	५.००
पौराणिक कथाएं (ले० ब्रह्मदत्त शर्मा)	३.५०
प्रेरणा द्वीप (ले० बृज भूषण)	४.००
भारत: एक चित्र कथा (बच्चों के लिए)	२.००
भारत के बच्चे चित्रमय झांकी	३.२५
भारत के नारी रत्न	४.५०
भैंसों का राजकुमार (ले० मोहन चौधरी)	२.२५
यह भारत (ले० शीला धर)	१०.००
यह गाथा वीर जवाहर की (ले० कन्हैया लाल मिश्र)	३.००
शेर का दिल (ले० बन्शीलाल गुप्ता)	३.००
सरल पंचतंत्र (ले० विष्णु प्रभाकर) भाग-१	१.७५
भाग-२	२.००

डाक खर्च मुफ्त

१० रुपये से कम की खरीद पर पंजीकृत शुल्क अतिरिक्त भेजिए।

मिलने का पता : प्रकाशन विभाग, भारत सरकार,
पटियाला हाऊस, नई दिल्ली ११०००१,

डी. ए. वी. पी. ७६/५९३

आशा पटट ... पहेली का ...

१. कुल ६ पैसे—एक ... लेकर तीनों कड़ियां ... (तीन पैसे) + फिर ... कड़ी में दो दूसरी ... जोड़िये (छः पैसे ...

२. ऊपर वाला आय... कर ऊपर ले जायें त... में खाली वर्ग बन जा...

फैशन का मजा...

कल मैंने अपनी पत्नी को बहुत तंग किया। पहले उसे नये फ़ैशन के कपड़े सिलवा कर दिये फिर घर के सारे आईने छिपा दिये!

मुझे नए व पुराने दोनों तरह के ही फ़ैशन पसंद हैं!

पर जल्दी-जल्दी चलिये, कहीं मुझ से पहले मुहल्ले की औरतें इस डिज़ाइन की साड़ी न खरीद कर पहन लें!

उस निकम्मे दर्जी ने मेरा बेलबाटम नीचे से दो इंच लम्बा बना दिया था। अब तुम बताओ अगर मैं एड़ी वाला सैंडिल न खरीदती तो उसे कैसे पहनती?

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा
सुपुत्र दैवज्ञभूषण
प. हंसराज शर्मा

१३ दिसम्बर से १९ दिसम्बर ७६ तक

मेष : सफर कैसा भी हो कर लें कामयाब रहेगा, स्त्री तथा संतान से सुख, व्यपारिक क्षेत्र में उन्नति एवं नवीनता का अहसास होगा, अधिक समय दैनिक कामों में ही व्यतीत होगा, सेहत को संभाल रखें, आया-व्यय समान।

वृष : व्यापार से यथार्थ लाभ परन्तु व्यय आय से अधिक होगा, घरेलू व आर्थिक समस्याओं के कारण परेशानी रह सकती है, दौड़-धूप भी काफी रहेगी, जिसके परिणाम आशा से विपरीत ही निकलेंगे, यात्रा आसपास की।

मिथुन : इन दिनों काफी अस्त-व्यस्तता रहेगी, घरेलू परेशानियों का सामना, सरकारी कामों में भागदौड़ काफी रहेगी, सेहत में बिगाड़, आर्थिक तंगी महसूस होगी, नातेदारों से व्यर्थ का वाद-विवाद रहेगा, व्यय यथार्थ।

कर्क : राजकर्मचारियों से कुछ परेशानी, कोई खास या अधूरा रह गया काम बन जावेगा, परिवार से सुख, मित्रों से सहयोग मिलेगा, स्त्री से व्यर्थ का वाद-विवाद रहेगा, यात्रा सफल रहेगी, व्यापार से लाभ अच्छा होगा।

सिंह : कारोबारी हालात अनुकूल ही चलेंगे एवं उन्नति भी महसूस होगी, आय में वृद्धि, कुछ अधूरे काम बनते दिखाई देंगे, व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर ही रहें तो अच्छा है, सरकारी कामों में सफलता, परिश्रम अधिक रहेगा।

कन्या : हालात तकरीबन ठीक ही चलेंगे, स्त्री तथा संतान से सुख, किसी प्रियजन से मिलाप, धर्म-कर्म में रुचि रहेगी, यात्रा में सुख व मान, अफसरों व बड़े लोगों के साथ मेल-मिलाप, समय सब प्रकार से सानंद व्यतीत होगा।

तुला : इन दिनों आप कुछ राहत महसूस करेंगे, स्वास्थ्य में सुधार व आर्थिक तरक्की के साथ-साथ व्यापारिक दशा में भी सुधार देखेंगे, कोई अधूरा या बिगड़ा काम पुनः प्रारम्भ हो जावेगा, जिससे लाभ भी हासिल होगा।

वृश्चिक : आय-व्यय समान ही, मित्रों से मेल-जोल बढ़ेगा, यात्रा में सुख व मान, फिर भी अजनबी लोगों से बचें, धन हानि का भय है, कारोबार में तरक्की होगी, घरेलू हालात साज़गार चलेंगे, शत्रु सामना न कर सकेंगे।

धनु : सफर अचानक हो जिसमें परेशानी भी हो सकती है, कोई आश्चर्यजनक घटना देखने या सुनने में आवेगी, स्त्री को कष्ट, उदासीनता का प्रभाव रहेगा, व्यापार से लाभ यथार्थ होगा, विशेष कामों में भाग्य साथ न देगा।

मकर : व्यापार से यथार्थ लाभ होगा, सरकारी कामों में परेशानी, कोई विशेष समाचार मिलेगा, यात्रा सफल रहेगी, अधिक दौड़धूप करने पर आपकी सेहत बिगड़ सकती है, अफसरों से मेल-जोल, विरोधी मुंह की खाएंगे।

कुम्भ : व्यापारिक कामों में अड़चन पड़ सकती है, परिश्रम अधिक, कोई शुभ या विशेष समाचार मिलेगा, बन्धु या किसी प्रिय से मिलाप या जुदाई, मित्र एवं नातेदारों के सहयोग से हौसला बढ़ेगा, आय-व्यय अधिक।

मीन : सोशल एवं घरेलू कामों में काफी व्यस्तता रहेगी, आय-व्यय समान ही, परिश्रम अधिक, व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा, आर्थिक हालात अनुकूल ही चलेंगे, यात्रा में सुख, स्त्री तथा संतानपक्ष से कुछ चिन्ता रहेगी।

अरुणा ईरानी

विजय भारद्वाज

अरुणा ईरानी आज की प्रसिद्ध सह-नायिका (नायिका) हैं। फिल्मी क्षेत्र में कदम रखने से पूर्व यह गुजराती स्टेज (नाटक-ड्रामे) पर अपने दस वर्ष पूरे कर चुकी थीं। स्टेज पर ख्याति प्राप्त करने के बाद ही इनके दिमाग में फिल्म लाईन पकड़ने का विचार कौंधा। इनकी प्रथम फिल्म 'गंगा-जमुना' ही थी, हालांकि इस फिल्म में इन्होंने बाल कला-नेत्री का रोल निभाया था। व्यस्क अभिनेत्री के रूप में इनकी प्रथम फिल्म 'पा... थी। यह फिल्म अपने जमाने की हिट ... में गिनी जाती है। सहनायिकाओं की ... में इनका नाम उच्चकोटि पर है। 'उपकार' की सफलता के बाद अरुणा ... की सफलता में भी चार चाँद लग ... इनकी अन्य उल्लेखनीय फिल्में इस प्र... 'पत्थर के सनम, 'चिराग, 'सफर, '... रात, कारवा, बाम्बे टू गोवा, '... 'बॉबी'।

आने वाली फिल्मों में 'सीता ... सीता' 'बाज' व 'बाप का बाप' उल्ले... हैं। इनके मुख्य शौक हैं फोटोग्राफी ... बच्चों से प्यार करना। हालांकि ... स्वयं अभी अविवाहित हैं लेकिन इन... बच्चे बहुत पसन्द हैं। अपनी दिन... कई घण्टे रोज यह अपने शौक पूरे ... गुजार देती हैं। दीवाना की यह ... पाठिका हैं। यदि पाठक इनसे पत्र व... करना चाहें तो इस इस पते पर इन... व्यवहार करके इनका हस्ताक्षर युक्त ... प्राप्त कर सकते हैं।

जल दर्शन, तीसरी मंजिल
नेपियन सी रोड
बम्बई—४००००६

तेज प्रेस नया बाजार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्ना लाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध संपादक विश्वबन्धु गुप्ता।